

महाकुंभ में पहुंची योगमाता कीको ऐकावा, जापान से है उनका ताल्लुक



प्रयागराज (एजेंसी)। प्रयागराज में महाकुंभ की तैयारियां जोरों-शोरों से की जा रही हैं। करोड़ों लोगों के प्रयागराज के महाकुंभ में आने की संभावना जताई जा रही है। इस बीच महाकुंभ

● कई अवसरों पर पीएम नरेंद्र मोदी से योगमाता की मुलाकात

में साधु-संतों और श्रद्धालुओं का जमावड़ा लगने लगा है। सभी साधु अपने आप में अनोखे हैं और चर्चा का केंद्र बने हुए हैं। वहीं जापान से महाकुंभ में आई योगमाता कीको ऐकावा के नाम पर भी खूब चर्चा हो रही है। बता दें कि योगमाता कीको ऐकावा पहली महिला सिद्ध गुरु और शांति



आध्यात्मिका की प्रतीक हैं। महाकुंभ में उनकी उपस्थिति महायोग पायलट बाबा की विरासत के

आगे ला जाने का काम कर रही है। बता दें कि अगस्त 2024 में महायोगी पायलट बाबा ने महासमाधि ले ली थी। इसके बाद योगमाता कीको ऐकावा ने उनके आध्यात्मिक मिशन की जिम्मेदारी को संभाला और उसे आगे बढ़ाने का काम किया। उनकी योगिक चेतना के कारण दुनियाभर में उन्हें अद्वितीय उपलब्धि मिली है। अगर उनकी उपलब्धियों की बात करें तो वह पहली महिला हैं जिन्होंने 96 घंटे तक बंद भूमिगत कक्ष में सार्वजनिक समाधि धारण की। साल 2007 में जुना अखाड़े के महामंडलेश्वर के रूप में उनके उत्थान ने वैश्विक ख्याति के आध्यात्मिक नेता के रूप में उनकी पहचान को विकसित किया।

बता दें कि ऐसे कई मौके रहें जब योगमाता कीको ऐकावा और पीएम नरेंद्र मोदी की मुलाकात की भी हुई। संयुक्त राष्ट्र में साल 2023 में अंतरराष्ट्रीय योग दिवस समारोह के दौरान पीएम नरेंद्र मोदी को उनका आशीर्वाद मिला और साल 2016 में भी पीएम नरेंद्र मोदी से उनकी मुलाकात की। इस दौरान उन्होंने भारत और जापान के बीच सामंजस्यपूर्ण रिश्ते के लिए प्रार्थना की। महाकुंभ 2025 में योगमाता की उपस्थिति आध्यात्मिक मार्गदर्शन का प्रतीक है। वह महाकुंभ में ध्यान सत्रों का आयोजन व उनका नेतृत्व करेंगी। इसके अलावा भक्तों व श्रद्धालुओं के साथ हिमालयी सिद्ध परंपरा की शिक्षाओं का भी प्रचार-प्रसार करेंगी।

संक्षिप्त समाचार

पाकिस्तान की राह चला बांग्लादेश

ढाका (एजेंसी)। बांग्लादेश लगातार भारत के साथ अपने रिश्तों को बिगाड़ता जा रहा है। अब वह पूरी तरह पाकिस्तान की राह चल चुका है। भारत में होने वाले जजों के कॉन्फ्रेंस के बाद ढाका ने नई दिल्ली में होने वाले एक और कार्यक्रम में भाग लेने से इन्कार कर दिया है। इससे दोनों देशों के बीच तनाव और ज्यादा बढ़ने की आशंका जाहिर की जा रही है। बांग्लादेशी अधिकारियों ने इसके पीछे सरकारी खर्च पर गैर-जरूरी विदेश यात्रा करने पर पाबंदियां लगाने का



हवाला दिया। उन्होंने भारत मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) की 150वीं वर्षगांठ से जुड़े समारोह में शामिल होने से इनकार कर दिया है। बांग्लादेश मौसम विभाग (बीएमडी) के कार्यवाहक निदेशक मोमिनुर इस्लाम ने शुक्रवार को एक महीने पहले आईएमडी से निमंत्रण मिलने की पुष्टि करते हुए कहा, «भारत मौसम विभाग ने हमें अपनी 150वीं वर्षगांठ से जुड़े समारोह में आमंत्रित किया है। हमारे उनके साथ अच्छे संबंध हैं और दोनों देशों के बीच सहयोग जारी रहेगा» इस्लाम ने 'बीडीन्यूज 24' से कहा, «हालांकि, हम इस कार्यक्रम में नहीं जा रहे हैं क्योंकि सरकारी खर्च पर गैर-जरूरी विदेश यात्राओं को सीमित करना एक दायित्व है।» उन्होंने दोनों देशों के मौसम विभागों के बीच नियमित संपर्क पर जोर दिया और भारतीय मौसम विज्ञानियों के साथ एक अलग बैठक के लिए 20 दिसंबर 2024 की अपनी हालिया भारत यात्रा का उल्लेख किया।

जाते-जाते रूस पर नए प्रतिबंध लगा गए बाइडेन

वाशिंगटन (एजेंसी)। अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन अपने प्रशासन के आखिरी दौर में भी रूस को बड़ा झटका दिया है। अमेरिका ने रूस पर नए ऊर्जा प्रतिबंध लगा दिए हैं। बाइडेन ने कहा कि अमेरिका ने रूस पर बड़े पैमाने पर प्रतिबंध लगाए हैं, ताकि यूक्रेन को अपनी स्वतंत्रता बनाए रखने और मॉस्को के खिलाफ लड़ने में मदद मिल सके।



बता दें कि बाइडेन ने नवनिर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप को कमान सौंपने से दस दिन पहले शुक्रवार को उन सभी कंपनियों और संस्थाओं पर प्रतिबंध लगा दिए जो ऊर्जा, खास तौर पर गैस के निर्यात में रूस की मदद करती हैं। अमेरिका की इस कार्रवाई में दो कंपनियां भारत की हैं। प्रतिबंध से संबंधित सूची में कहा गया है कि दो भारतीय कंपनियां 'स्काईहार्ट मैनेजमेंट सर्विसेज' और 'एल्विन मैनेजमेंट सर्विसेज' पर पाबंदी लगाई गई है। बाइडेन ने एक सवाल के जवाब में कहा, «ये प्रतिबंध इसलिए लगाए गए हैं, क्योंकि इनका रूसी अर्थव्यवस्था पर गहरा प्रभाव पड़ेगा। साथ ही पुतिन के लिए युद्ध लड़ना और भी मुश्किल हो जाएगा»। बाइडेन ने एक प्रश्न के उत्तर में कहा, «हो सकता है कि गैस की कीमतें 0.03 से 0.04 अमेरिकी डॉलर प्रति गैलन तक बढ़ जाएं, लेकिन इससे रूस की युद्ध लड़ने की क्षमता पर गहरा प्रभाव पड़ेगा।»

दिल्ली समेत पूरा उत्तर भारत में कड़ाके की ठंड और शीतलहर



नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली समेत पूरा उत्तर भारत इस वक्त कड़ाके की ठंड और शीतलहर का सामना कर रहा है। सुबह और शाम की घना कोहरा और सर्द हवाएं लोगों के लिए परेशानी का कारण बन गई हैं। शनिवार और रविवार को दिल्ली में बारिश की संभावना जताई गई है। इसके अलावा कोहरा ने दिल्ली की स्थिति को और भी कठिन बना दिया है, जिससे ट्रेनों और फ्लाइट्स का संचालन प्रभावित हो रहा है। उत्तर प्रदेश और बिहार में भी मौसम में बदलाव आने की संभावना है। पहाड़ी क्षेत्रों में बर्फबारी हो रही है, और कई स्थानों पर न्यूनतम तापमान माइनस डिग्री सेल्सियस तक पहुंच चुका है, जिससे लोग जबरदस्त ठंड का सामना कर रहे हैं। आइए अब जानते हैं कि आज देशभर में मौसम का हाल क्या रहने वाला है। 12 जनवरी को दिल्ली में मध्यम कोहरा छा सकता है और सुबह के समय हल्की बारिश या बूंदबांदी हो सकती है। अधिकतम तापमान 16 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम तापमान 11 डिग्री सेल्सियस रहने का अनुमान है। 13 से 16 जनवरी तक दिल्ली में मध्यम कोहरा बना रह सकता है। इस दौरान अधिकतम तापमान 19-20 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम तापमान 7 से 9 डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकता है।

असम खदान हादसा, छठे दिन 3 शव मिले, 5 मजदूर अब भी खदान में फंसे

वाटर लेवल 6 मीटर घटा, रेस्क्यू जारी

नई दिल्ली (एजेंसी)। असम के दीमा हसाओ जिले में 300 फीट गहरी कोयला खदान से शनिवार को तीन शव निकाले गए। इनमें एक सुबह और दो दोपहर में मिले। अब तक चार मजदूरों के शव मिल चुके हैं। इनमें से 2 की पहचान नहीं हो सकी है। शनिवार सुबह 27 साल के लिजान मगर का शव पानी पर तैरता मिला था। वह दीमा हसाओ के कलामती गांव नंबर 1 का निवासी था। इससे पहले बुधवार को नेपाल के रहने वाले गंगा बहादुर श्रेष्ठ का शव मिला था। एनडीआरएफ की टीम शनिवार सुबह पानी का लेवल चेक करने गई थी, तभी उन्हें लिजान मगर का शव तैरता दिखा। उसे सुबह करीब 7.30 बजे बाहर निकाला गया। खदान में पानी का लेवल 6 मीटर कम हो गया है। 5 पंप से रात भर पानी निकाला गया।



खनिज विकास निगम के अधीन थी। 6 जनवरी को पहली बार मजदूर खदान में घुसे थे। 3 किलो उमरांगसो में बनी इस खदान में 6 जनवरी को पानी भर गया था। जिससे वहां काम कर रहे रैट होल माइनर्स फंस गए। बाकी बचे 5 मजदूर के लिए रेस्क्यू ऑपरेशन आज भी जारी है।

महाकुंभ में दान दी गई बच्ची का संन्यास वापस

महतं 7 साल के लिए अखाड़े से निष्कासित, नाबालिग को गलत ढंग से बनाया था शिष्य

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रयागराज महाकुंभ में दीक्षा लेने वाली 13 साल की लड़की का संन्यास 6 दिन में ही वापस हो गया। दीक्षा दिलाने वाले महंत कौशल गिरि को जुना अखाड़े से 7 साल के लिए निष्कासित कर दिया गया। उन्होंने नाबालिग को गलत तरीके से शिष्य बनाया था। श्रीपंचदशनाम जुना अखाड़ा के संरक्षक हरि गिरि महाराज ने कहा- यह अखाड़े की परंपरा नहीं रही है कि किसी नाबालिग को संन्यासी बना दें। इस मुद्दे पर बैठक कर सर्वसम्मति से फैसला लिया गया है।

माता-पिता के साथ कुंभ आई थी: नाबालिग लड़की आगरा की रहने वाली है। वह 5 दिसंबर को परिवार के साथ महाकुंभ आई थीं। नागाओं को देखकर उसने संन्यास लेने का फैसला किया। परिवार के साथ घर जाने से मना कर दिया था। बेटी की जिद पर माता-पिता ने भी



उसे जुना अखाड़े के महंत कौशलगिरि को दान कर दिया। इसके बाद लड़की को पहले संगम स्नान कराया गया। संन्यास के बाद उसका नाम बदल दिया गया। नया नाम रखा गया।

19 को महाकुंभ में होना था उसका पिंडदान: 19 जनवरी को नाबालिग का पिंडदान होना था। महामंडलेश्वर महंत कौशल गिरि ने लड़की के पिंडदान कराने की भी तैयारी कर ली थी, लेकिन इससे

पहले अखाड़े की सभा ने यह कार्रवाई कर दी। दरअसल, संन्यासी बनने के दौरान खुद का पिंडदान करने की परंपरा है। नाबालिग के पिता कारोबारी, कई सालों से संत से जुड़े हैं: नाबालिग लड़की के पिता पेठा कारोबारी हैं। पूरा परिवार आगरा में रहता है। परिवार श्री पंचदशनाम जुना अखाड़ा के महंत कौशल गिरि से कई सालों से जुड़ा है। परिवार में माता-पिता और दो बेटियां हैं। दोनों बहनें आगरा के कान्वेंट स्कूल में पढ़ती हैं। संन्यासी बनने वाली नाबालिग नौवीं में और उसकी छोटी बहन दूसरी क्लास में पढ़ती हैं। संन्यास लेने के दौरान नाबालिग लड़की की मां ने दैनिक भास्कर को दिए इंटरव्यू में कहा था- उनकी बेटी पढ़ाई में होशियार है। वह बचपन से ही भारतीय प्रशासनिक सेवा में जाने का सपना संजोए हुए थी, लेकिन कुंभ में आने के बाद उसका विचार परिवर्तित हो गया।

नाबालिग से सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर ने किया दुष्कर्म, 20 साल की सजा

विशाखापट्टनम (एजेंसी)। सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर फन बकेट भार्गव को एक नाबालिग लड़की का यौन उत्पीड़न करने के आरोप में 20 साल जेल की सजा सुनाई गई। आंध्र प्रदेश के विशाखापट्टनम में पॉक्सो कोर्ट ने इसकी जांच करते हुए भार्गव को 20 साल के सश्रम कारावास और पीड़ित लड़की को चार लाख रुपये का मुआवजा देने का फैसला सुनाया। फन बकेट भार्गव उनमें से एक हैं, जो टिक टॉक्स और इंस्टाग्राम रील्स के जरिए लोकप्रिय हैं। बाद में उन्होंने यूट्यूब फन बकेट कॉमेडी वीडियो में अभिनय किया। फन बकेट भार्गव ने कॉमेडी स्किट और पंच पेश कर दर्शकों को खूब हंसाया। इस क्रम में भार्गव कई लड़कियों के संपर्क में आया, लेकिन भार्गव ने अपने साथ वीडियो बना रही 14 साल की लड़की के साथ रेप किया था।

पीड़िता को बहन बताता था आरोपी: आरोपी ने यूट्यूब वीडियो बनाने वाली 14 साल की लड़की को अपनी बहन बताया था। हालांकि, बाद में लड़की गर्भवती हो गई। 16 अप्रैल, 2021 को लड़की की मां ने पुलिस से संपर्क किया। पुलिस ने मामले की जांच की और दिशा और पॉक्सो एक्ट के तहत मामला दर्ज कर भार्गव को गिरफ्तार कर लिया। जांच में भार्गव दोषी पाया गया। इसके बाद कोर्ट ने उसके खिलाफ फैसला सुनाया है। भार्गव अभी भी खासा लोकप्रिय हैं। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म इंस्टाग्राम पर उसके तीन लाख के करीब फॉलोअर्स हैं।



कन्नौज स्टेशन पर वेटिंग हॉल गिरा

40 लोग दबे, 23 मजदूरों को निकाला, 13 करोड़ की लागत से बन रहा था

कन्नौज (एजेंसी)। कन्नौज रेलवे स्टेशन पर शनिवार को बड़ा हादसा हो गया। यहां दो मंजिला निर्माणाधीन स्टेशन का लिंटर अचानक ढह गया। मलबे में 40 से ज्यादा मजदूर दब गए। अब तक 23 घायल जिला अस्पताल पहुंचाए गए हैं। इनमें से 7 को राजकीय मेडिकल कॉलेज तिर्वा फरर किया गया है। हादसे के बाद रेस्क्यू ऑपरेशन चल रहा है। घायलों की ई-रिक्शे और एंबुलेंस से अस्पताल ले जाया गया। सीनियर अफसरों ने घटना की जांच के आदेश दिए हैं। 1 जेसीबी और 3 गाड़ी फायर ब्रिगेड की मौके पर रेस्क्यू में जुटी हैं।

स्टेशन पर अमृत भारत योजना के तहत दो मंजिला नई बिल्डिंग बन रही थी। शनिवार सुबह अचानक पूरा लिंटर ढह गया। सूचना मिलते ही यूपी सरकार के मंत्री असीम अरुण भी मौके पर पहुंचे। डीएम सुभ्रंत कुमार शुक्ला और एसपी विनोद कुमार, सीओ सिटी घटनास्थल पर हैं। कानपुर जोन के आईजी जोगेंद्र सिंह भी कन्नौज रेलवे स्टेशन पहुंच गए हैं। सीएम योगी ने कन्नौज में हुए हादसे का संज्ञान लेते हुए अधिकारियों को तुरंत मौके



पर पहुंच कर राहत काम में तेजी लाने के निर्देश दिए हैं। रेलवे ने दो कोच वाली विशेष ट्रेन से बचाव दल कन्नौज स्टेशन भेजा है।

इस गाड़ी से बचाव कार्य में इस्तेमाल होने वाली मशीनें, कटर और उपकरण उतारे गए। ड्रॉम स्कॉवर भी बुलाई गई।

हर युवा को रोजगार, संकल्पबद्ध राज्य सरकार-मंत्री शुक्ला

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। नवीन एवं नवकरणीय ऊर्जा मंत्री श्री राकेश शुक्ला ने भिण्ड जिले के मेहगांव में शुक्रवार को युवा संगम जिला स्तरीय रोजगार, स्व-रोजगार एवं अग्रेंटिस शिप मेले में युवाओं को नियुक्ति-पत्र सौंपे। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार युवाओं को रोजगार उपलब्ध कराने के लिये संकल्पबद्ध होकर कार्य कर रही है। मंत्री श्री शुक्ला कार्यक्रम में मौजूद जनता और युवाओं को संबोधित कर रहे थे। जिला स्तरीय रोजगार, स्व-रोजगार मेले में 62 प्रतिष्ठित कम्पनियों ने सहभागिता की। नवीन एवं नवकरणीय ऊर्जा मंत्री श्री शुक्ला ने कहा कि भारत को विकसित राष्ट्र बनाने में युवा पीढ़ी की महत्वपूर्ण भूमिका है। युवाओं को शिक्षित व कुशल बना कर उन्हें योग्यता के आधार पर रोजगार एवं स्व-रोजगार प्रदान करने में केन्द्र एवं प्रदेश सरकार द्वारा सार्थक प्रयास किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की मंशा हर युवा को शिक्षित कर रोजगार से जोड़ना है। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री डॉ. यादव इसके लिए 12 जनवरी को स्वामी विवेकानंद जयंती के शुभ अवसर पर प्रदेश के युवाओं को महत्वपूर्ण सौगात देने जा रहे हैं। नवकरणीय ऊर्जा मंत्री श्री शुक्ला ने कहा कि जिला स्तरीय रोजगार मेले का मुख्य उद्देश्य युवाओं को उचित नौकरी दिलाने में मदद करना है। इस तरह के रोजगार मेलों से युवाओं को रोजगार के नये अवसर प्राप्त होते हैं। हमारा प्रयास है कि जिला स्तरीय रोजगार मेले को विकासखंड स्तर पर भी ले जाया जाये, जिससे कि ग्रामीण क्षेत्र के युवाओं को भी रोजगार के अवसर सरलता से मुहैया कराये जा सकें। इन मेलों से रोजगार के इच्छुक युवाओं को कंपनी से सीधे संपर्क करने का अवसर भी सहज उपलब्ध होता है। मंत्री श्री शुक्ला ने कहा कि उन्हें गर्व है कि भिण्ड आगे बढ़ रहा है। अब वो समय नहीं है, जब भिण्ड की पहचान डकैतों से की जाती थी। आज भिण्ड के युवा देश की रक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। भिण्ड जिले के युवा आईएस एवं आईपीएस भी बन रहे हैं। उन्होंने युवाओं को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि आप आगे बढ़ने का प्रयास करें, मार्ग की बाधाएं दूर करने का काम मध्यप्रदेश सरकार के प्रतिनिधि के रूप में वे करेंगे। रोजगार मेले में पहुंचे 786 युवाओं का विभिन्न कंपनियों से आए अधिकारियों ने साक्षात्कार लिया। इसमें 400 युवाओं का लत्काल चयन किया गया। मंत्री श्री शुक्ला ने मेले में ही 100 से अधिक युवाओं को ऑफर लेटर भी प्रदान किये। भिण्ड के जिला स्तरीय रोजगार, स्व-रोजगार मेला में इवेलटेक इन्डस्ट्री मालनपुर, देवकवी हाइड्रोलिक एण्ड इंजीनियरिंग मालनपुर, मोहम्मद इन्डस्ट्री मालनपुर, जौली कन्न्मेरस, पुखराज पोलीमर्स मालनपुर, व्हीएस इन्टरप्राइजेज मालनपुर, मोरविननन्दन स्टील प्राइवेट, डेलफिस कन्टेनर प्राइवेट लिमिटेड, वेनचुरा सालासर, हाइलाइट ड्रास एण्ड फर्मासिटिकल्स लिमिटेड पी सीकोसमा सॉफ, साई फर्मासिटिकल्स प्राइवेट लिमिटेड, शिव शक्ति टैक, ग्लोरियस पॉलीप्लास्ट मालनपुर, राखव ट्रांसफार्मर इन्डस्ट्री, डेफेट ओरोनिकस लिमिटेड, मायरा बायोमास इनरजी, एएस पाइर इंजीनियरिंग, जय मारुति, जय मां अनजनिया गैस, मां केला देवी मेटल, बृजबाजी पैकिंग, सूर्या रोशनी, एसआरएफ लिमिटेड, सुग्रीम, तेवा, मैडिल फॉर्मूलेशन, जमुना ओटो, रिसवा, इनवर्ट सुगर, सूर्या रोशनी स्टील लिमिटेड मालनपुर एवं अन्य प्रतिष्ठित कम्पनियों द्वारा भाग लिया गया।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने आष्टा में हुई सड़क दुर्घटना पर किया दुःख व्यक्त

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने सीहोर जिले के आष्टा में हुई सड़क दुर्घटना में ट्रैक्टर-ट्रॉली में सवार दो यात्रियों की असांयिक मृत्यु और कई यात्रियों के गंभीर रूप से घायल होने पर दुःख व्यक्त किया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बाबा महाकाल से मृतकों की आत्मा की शांति और घायलों के शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की प्रार्थना की है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि दुःख की इस घड़ी में हम सभी शोकाकुल परिवार के साथ हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने राज्य शासन की ओर से मृतकों के परिवार को 2 लाख रुपए की आर्थिक सहायता मंजूर की है। उन्होंने जिला प्रशासन सीहोर को सभी घायलों के समुचित उपचार की व्यवस्था करने के निर्देश दिए हैं।

मंत्रीालय में दिया गया सी.पी.आर. प्रशिक्षण

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मंत्रालय वल्लभ भवन, विंध्याचल एवं सतपुड़ा की सुरक्षा में तैनात समस्त अधिकारी एवं कर्मचारियों को डॉ. राकेश भार्गव, डॉ. उमेश पटेल एवं डॉ. जे.पी. चौरीश्या ने कार्डियो-फल्मोनरी रिससिटेशन (सीपीआर) संबंधी प्रशिक्षण देकर आवश्यक एवं जानकारी प्रदान की। समस्त सुरक्षा कर्मियों को बताया गया कि सी.पी.आर. से किसी व्यक्ति को कैसे प्राथमिक उपचार देकर जीवनदान दिया जा सकता है। डमी के माध्यम से सीपीआर ट्रेनिंग देते हुए इस प्रक्रिया को सभी ने व्यावहारिक रूप से समझा और जाना कि आकस्मिक परिस्थितियों में यह कितना महत्वपूर्ण है। कार्यक्रम में किरण फाउंडेशन के सचिव डॉ. भार्गव, डॉ. चौरीसिया, डॉ. पटेल, कार्डसलर रवि कर्नौजिया और सहायक पुलिस आयुक्त सुखा, श्री अविनाश सहित वल्लभ भवन, सतपुड़ा एवं विंध्याचल के समस्त पुलिस अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

मध्यप्रदेश राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण जबलपुर के प्रभारी सदस्य सचिव ने किया केन्द्रीय जेल भोपाल का औचक निरीक्षण



मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मध्यप्रदेश राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण, जबलपुर के प्रभारी सदस्य सचिव श्री प्रदीप मित्तल ने शनिवार को किया औचक निरीक्षण। निरीक्षण के दौरान उनके साथ श्रीमती आरती शर्मा, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण भोपाल एवं जिला

विधिक सहायता अधिकारी श्री अभय सिंह उपस्थित रहे। प्रभारी सदस्य सचिव द्वारा केन्द्रीय जेल के निरीक्षण के दौरान पाकशाला, जेल में संचालित समस्त उद्योगों, अष्टकोण कार्यालय एवं जेल लीगल क्लीनिक का निरीक्षण कर जेल में परिरूद्ध समस्त पुरुष बंदियों से मिलकर उनसे

ज्ञानवान होने के साथ उसे आचरण में उतारना जरूरी - राज्यपाल

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल ने कहा है कि ज्ञानवान होना ही पर्याप्त नहीं है, ज्ञान को आचरण में उतारना भी जरूरी है। भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी जैसे महान कवि, लेखक और राष्ट्रभक्त की स्मृति में स्थापित विश्वविद्यालय के छात्र-छात्राओं का दायित्व है कि वह देश, समाज, समुदाय,परिवार और वंचितों के प्रति संवेदनशील रहें। राज्यपाल श्री पटेल शनिवार को कुशाभाऊ ठाकरे अंतर्राष्ट्रीय कन्वेंशन सेंटर हॉल में आयोजित अटल बिहारी वाजपेयी हिन्दी विश्वविद्यालय के पांचवें दीक्षांत समारोह में उपस्थित अतिथियों और विद्यार्थियों को संबोधित कर रहे थे। राज्यपाल श्री पटेल ने कहा कि भावी जीवन में कैरियर की सफलताओं में माता-पिता, गुरुजान और समाज के जरूरतमंद पीछे नहीं छूटने चाहिए। पालकों के संघर्ष के पलों, समाज के सबसे पिछड़े, गरीब व्यक्ति के आपकी शिक्षा-दीक्षा में प्रत्यक्ष और परोक्ष सहयोग को सदैव याद रखें। दीक्षांत शपथ के दस्तावेज को सम्भाल कर रखें। प्रतिदिन उसे दोहराएं और उसके अनुसार आचरण करें। आस-पास के वंचितों की जरूरतों की जानकारी लें। उनको पूरा करने का यथा संभव प्रयास करें। उन्होंने स्वामी विवेकानंद का उल्लेख करते हुए कहा कि हर व्यक्ति में अपार क्षमता है



आवश्यकता अपनी शक्तियों को जगाने की है। उन्होंने विद्यार्थियों को विश्वविद्यालय की गरिमा को बढ़ाने और समाज एवं राष्ट्र की सेवा में उत्कृष्ट योगदान देने के लिए शुभकामनाएं दी। भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान भोपाल के निदेशक श्री आशुतोष सिंह ने महाभारत के मछली की आँख वाले प्रसंग का उल्लेख करते हुए बताया कि जीवन में सफलता के लिए कठिन

प्रतिस्पर्धा हर युग में रही है, आगे भी रहेगी। भावी जीवन में भी रोज नई परीक्षा देनी होगी। आवश्यकता देश, काल और परिस्थिति के अनुसार स्वयं को ढालकर प्रयास करने की है। अंधेरा कितना भी घना हो, दिया जलाने पर रोक नहीं लगाता है। उन्होंने कहा कि याद रहे मंजिल उन्हें मिलती है जिनके सपनों में जान होती है। पंख होना पर्याप्त नहीं, उड़ान का हौसला होना

जरूरी है। संचालक म.प्र. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी श्री अशोक कडैल ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति आधुनिक तकनीकी और रोजगार मूलक शिक्षा व्यवस्था के साथ ही भारतीय संस्कृति की जड़ों से जुड़ी व्यवस्था है। अटल बिहारी वाजपेयी हिन्दी विश्वविद्यालय द्वारा इस दिशा में किए जा रहे प्रयासों का उल्लेख करते हुए कहा कि भारतीय जनमानस के साथ संवाद और संपर्क का प्रभावी माध्यम भारतीय भाषाएं हैं। उन्होंने कहा कि गैर पारम्परिक हिन्दी विश्वविद्यालय के छात्रों का दायित्व है कि वह हिन्दी के मान सम्मान को समृद्ध और सफल बनाने में योगदान करें। उन्होंने विद्यार्थियों को स्वामी विवेकानंद के विचारों से प्रेरणा लेने के लिए कहा है। विश्वविद्यालय के कुलगुरु श्री खेम सिंह ढ्डेरिया ने विश्वविद्यालय के प्रगति प्रतिवेदन का विवरण दिया। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय वाणिज्य,एम.बी.ए. तथा शिक्षा शास्त्र में स्नातकोत्तर उपाधि के साथ ही डेयरी संचालन करेगा। कृषि एवं इंजीनियरिंग पाठ्यक्रम भी प्रारंभ किए जाएंगे। उन्होंने विश्वविद्यालय के प्रकाशनों का कार्यक्रम में लोकार्पण अतिथियों के द्वारा कराया। आभार प्रदर्शन कुलसचिव श्री शैलेन्द्र कुमार जैन ने किया।

12 जनवरी को युवा दिवस पर समस्त विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों में होगा सामूहिक सूर्य-नमस्कार

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। स्वामी विवेकानंद के जन्म-दिवस 12 जनवरी को प्रतिवर्ष की तरह युवा दिवस के रूप में मनाया जाएगा। युवा दिवस पर समस्त शासकीय एवं अशासकीय विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में सामूहिक सूर्य नमस्कार के साथ ही स्वामी विवेकानंद पर केन्द्रित प्रेरणादायी, शैक्षिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम होंगे। उच्च शिक्षा विभाग द्वारा जारी निर्देशों में प्रदेश की समस्त विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में 12 जनवरी को प्रातः 9 से 10:30 बजे तक सामूहिक सूर्य-नमस्कार का आयोजन सुनिश्चित करने के निर्देश दिये गये हैं। कार्यक्रम में राष्ट्रीय गीत वंदे-मातरम और मध्यप्रदेश गान का सामूहिक गायन होगा। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव का रेडियो पर संदेश

भी प्रसारित होगा, इसके साथ ही सूर्य नमस्कार एवं प्राणायाम कार्यक्रम संपन्न होगा। सामूहिक सूर्य-नमस्कार समस्त शिक्षण संस्थाओं में एक साथ, एक संकेत पर किया जायेगा। युवा दिवस पर पूर्वान्ह 11.30 बजे से स्वामी विवेकानंद युवाओं के लिए शाश्वत प्रेरणा विषय पर भाषण प्रतियोगिता होगी। साथ ही स्वामी विवेकानंद के जीवन पर चित्र प्रदर्शनी एवं उनके शिकागो व्याख्यान के वीडियो का प्रदर्शन किया जाएगा। उच्च शिक्षा विभाग ने समस्त शासकीय एवं अशासकीय विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में सामूहिक सूर्य-नमस्कार और इससे जुड़े कार्यक्रमों में स्वयंसेवी संगठनों और आम लोगों की भागीदारी भी सुनिश्चित करने के लिये कहा है।

मैराथन में अधिक से अधिक आमजन करें सहभागिता-मंत्री सारंग

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। खेल एवं युवा कल्याण मंत्री श्री विश्वास कैलाश सारंग ने 19 जनवरी को होने वाली ऑर्मी मैराथन के संबंध में शुक्रवार को निजी और शासकीय विश्वविद्यालय के पदाधिकारियों के साथ चर्चा की। उन्होंने सभी विश्वविद्यालय के युवा एवं फैकल्टी को फिट रहने के लिये मैराथन में भागीदारी करने की अपील की। सभी ने फिट रहने के लिये इसमें भागीदारी करने की सहमति प्रदान की। मंत्री श्री सारंग ने भोपालवासियों से अधिक से अधिक संख्या में मैराथन में सहभागिता करने का आह्वान किया।

मंत्री श्री सारंग ने कहा कि स्वच्छ भारत, हरित भारत, फिट इंडिया के लिये भारतीय सेना के साथ दौड़े। यह सहन शक्ति, दृढ़ संकल्प और विजय



की परिचायक बने। उन्होंने बताया कि मैराथन अपने आदर्श वाक्य फिट इंडिया, रन विद इंडियन ऑर्मी के माध्यम से भारत सरकार के फिट इंडिया एकता और देशभक्ति के अभियान को बढ़ावा देगा। मैराथन में 3 श्रेणी रखी गई है इसमें 21 किमी, 10 किमी और 5 किमी के लिये न्यूनतम शुरुआत पर रजिस्ट्रेशन किया जा सकता है। सहभागियों को टी-शर्ट और ऑर्मी मैराथन में भाग लेने का प्रमाण-पत्र दिया

जायेगा। यही नहीं संस्था, विश्वविद्यालयों को भी इसका प्रमाण-पत्र मोमेन्टो के साथ प्रदाय किया जायेगा। उन्होंने बताया कि मैराथन भोपाल स्थित द्रौणांचल से वीआईपी रोड होते हुए द्रौणांचल पर समाप्त होगी। मंत्री श्री सारंग ने सभी विश्वविद्यालय के पदाधिकारियों से संबंधित संस्था एवं संस्थानों के सोशल मीडिया एकाउन्ट से व्यापक प्रचार-प्रसार करने को भी कहा है। मंत्री श्री सारंग ने कहा

कि हम घर और देश में सुरक्षित हैं, इसमें ऑर्मी का महत्वपूर्ण योगदान है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने इसके लिये सार्वजनिक रूप से सेना और सैनिकों के प्रति सम्मान करने की भावना को व्यक्त करने को कहा है। भोपाल में भी ऑर्मी का महत्वपूर्ण सेट-अप स्थापित है। ऑर्मी मैराथन के माध्यम से नागरिक सहयोग और सम्मान प्रकट कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि मैराथन में अधिक से अधिक भागीदारी कर इतिहास बनाया जा सकता है। ऑर्मी मेजर जनरल श्री सुमित कर्बथियाल ने कहा कि मंत्री श्री सारंग के माध्यम से राज्य सरकार का सहयोग मिल रहा है। यह मैराथन क्लचर ऑफ फिटनेस को बढ़ावा देगी और फिट रहने एवं हेल्थ के प्रति जागरूक करने में सहायक सिद्ध होगी।

मंत्री श्री सारंग ने कहा कि युवा दिवस के रूप में मनाती है। इसे मनाने का उद्देश्य शासन जनता के प्रति पारदर्शी प्रभावी और जवाबदेह हो। मंत्री श्री पटेल ने नगर पालिका के अध्यक्ष सहित सभी अधिकारी-कर्मचारियों से अपेक्षा की कि वे सुशासन की दिशा में लोगों के हित में कार्य करें, यहीं पूर्व प्रधानमंत्री स्व. वाजपेयी के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। प्रदेश में नवीन ग्राम पंचायतों में जो भवन बनाये जायेंगे, उन्हें अटल ग्रामीण सेवा सदन का नाम दिया गया है। मंत्री श्री पटेल ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने प्रधानमंत्री आवास योजना शुरू की। इस योजना का उद्देश्य है कि देश के जरूरतमंद व्यक्तियों के पास पक्के मकान नहीं हैं, उनके स्वयं के पक्के मकान हो। मंत्री श्री पटेल ने कहा कि योजना में छूटे हुए पात्र व्यक्तियों के लिए आवास प्लस की सूची बनाई गई है। इसमें मध्यप्रदेश के 27 लाख परिवारों को शामिल किया गया है। इस कड़ी में तीसरा और अंतिम सर्वे भी किया जा रहा है, जिसका उद्देश्य है कि कोई भी पात्र व्यक्ति इस योजना से वंचित न रहे। उन्होंने जनप्रतिनिधियों से कहा कि यह काम हमें निचले स्तर से प्रारंभ करना होगा।

सीएमएचओ के औचक निरीक्षण में अनुपस्थित मिले काटजू अस्पताल के चिकित्सकों पर हुई कार्यवाही

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। सिविल अस्पताल डॉक्टर कैलाशनाथ काटजू की सायंकालीन ओपीडी के औचक निरीक्षण में अनुपस्थित पाए गए चिकित्सकों के खिलाफ सीएमएचओ द्वारा कार्यवाही की गई। 11 जनवरी को शाम को 5.00 बजे मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी भोपाल डॉ. प्रभाकर तिवारी द्वारा अस्पताल में सायंकालीन चिकित्सा व्यवस्थाओं को देखने के लिए निरीक्षण किया गया था। इस दौरान कुछ चिकित्सक कर्तव्य से अनुपस्थित पाए गए, जबकि कुछ विलंब से ओपीडी में पहुंचे। ड्यूटी से अनुपस्थित पाए गए चिकित्सकों के विरुद्ध एक दिन का वेतन काटकर संबंधितों को कारण बताओं



नोटिस जारी किया गया है। अस्पताल की सायंकालीन ओपीडी में स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ. शशि कावड़े, डॉ. कीर्ति डाले, शिशु रोग विशेषज्ञ डॉ. सुजाता जनवदे, डॉ. प्रतिभा रैकवार, डॉ. वैभव मोदी, डॉ. कामना श्रीवास्तव अनुपस्थित मिले जिनके विरुद्ध कार्यवाही

की गई है। जबकि डॉ. सुरभि कुहिकर और डॉ. प्रमोद पटेल नियत समय पर ड्यूटी पर उपस्थित मिले। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी भोपाल डॉ. प्रभाकर तिवारी ने बताया कि सिविल अस्पताल डॉक्टर कैलाशनाथ काटजू मातृ एवं

शिशु स्वास्थ्य सेवाओं के लिए आदर्श अस्पताल के रूप में संचालित किया जा रहा है। मरीजों को समय पर उपचार मिल सके, इसके लिए चिकित्सकों एवं पैरामेडिकल स्टाफ का अस्पताल के निर्धारित समय पर उपस्थित रहना अनिवार्य है। निरीक्षण के दौरान कुछ चिकित्सक विलंब से ओपीडी में उपस्थित हुए, जबकि कुछ चिकित्सक अनुपस्थित पाए गए। निरीक्षण की कार्यवाही भविष्य में निरंतर जारी रहेगी। अनुपस्थित पाए गए चिकित्सकों का एक दिन का वेतन काटकर कारण बताओं नोटिस जारी किया गया है। नोटिस का जवाब अस्तोचजनक पाए जाने अथवा कार्यप्रणाली में सुधार न करने पर वरिष्ठ कार्यालय को अनुशासनात्मक कार्यवाही का प्रस्ताव प्रेषित किया जाएगा।

रिश्वत का आरोपी अधिकारी हटाया गया

रोजगार मेले में 114 आवेदकों का हुआ चयन

कलेक्टर कार्यालय में अटैच, लोकायुक्त पुलिस ने 5 हजार रुपए घूस लेते पकड़ा था

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। मध्य प्रदेश के सीधी जिले में एक बड़ी प्रशासनिक कार्रवाई की गई है। जनजाति कार्य विभाग के सहायक आयुक्त डॉ. डीके द्विवेदी को शुक्रवार को लोकायुक्त पुलिस ने 5 हजार की रिश्वत लेते रहे हाथों गिरफ्तार किया था। इस घटना के बाद आज अपर कलेक्टर ने डॉ. द्विवेदी से सभी प्रभार वापस ले लिए हैं।

मध्य प्रदेश शासन सामान्य प्रशासन विभाग मंत्रालय भोपाल के आदेश पर डॉ. द्विवेदी को उनके सभी वर्तमान कार्यभार से मुक्त कर दिया गया है। उन्हें कलेक्टर कार्यालय में संबद्ध कर दिया गया है। अपर कलेक्टर अंशुमान राज ने स्पष्ट किया कि यह कार्रवाई सिविल



सेवा आचरण अधिनियम के तहत की गई है। अपर कलेक्टर अंशुमान राज ने बताया कि जब कोई अधिकारी या कर्मचारी भ्रष्टाचार से जुड़े मामलों में सल्लिप्त पाया जाता है, तो



नियमानुसार ऐसी कार्रवाई की जाती है। डॉ द्विवेदी को दोष सिद्ध होने तक कलेक्टर कार्यालय में सम्बद्ध रखा जाएगा। यह कार्रवाई प्रशासन की जोरो टॉलरेंस नीति को दर्शाती है।



37 वर्ष, ऊंचाई 172 से.मी., निर्धारित किया गया। पद-एन.सी.ओ. स्नातक एक्सपीरियंस, उम्र 30 से 37 वर्ष, ऊंचाई 170 से.मी. एवं हाउस कीफिंग (वेटर) 8 वीं, उम्र 18 से 37 वर्ष निर्धारित किया गया है। आयोजित रोजगार मेला में 152 बेरोजगार युवकों का पंजीयन हुआ। 114 आवेदकों का चयन किया गया है। रोजगार मेला में एजाइल सिक्कोरिटी फेर्स प्रा. लि. कम्पनी के आशीष अरजरिया एवं कुलदीप सोनतिया सहायक सुरक्षा अधिकारी द्वारा उपस्थित युवकों का निर्धारित मापदण्डों के आधार पर सलेक्शन किया गया। आयोजित मेला में विकासखण्ड प्रबंधक अशोक पाण्डेय रोजगार मेला प्रभारी रणजीत सिंह सहायक विकासखंड प्रबंधक मनोज मिश्रा, प्रशांत सिंह, अनामिका मिश्रा, अमरनाथ यादव एवं आरसेटी रेनू सिंह उपस्थित रहे।

अनुभूति कार्यक्रम का आयोजन

गांधीग्राम में 60 विद्यार्थियों को वन्य जीवों और जड़ी-बूटियों की जानकारी दी



मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। सीधी के गांधीग्राम में शनिवार को 'अनुभूति कार्यक्रम' का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय खुर्द और नेबूहा में कुल 60 विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य बच्चों को प्रकृति और वन्य जीवन से परिचित कराना था।

कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थियों को वन्य प्राणियों, पेड़-पौधों और पारिस्थितिक तंत्र की विस्तृत जानकारी दी गई। बच्चों को विभिन्न प्रकार की जड़ी-बूटियों की पहचान कराई गई और उन्हें नदी, जंगल और

पहाड़ों की विशेषताओं से अवगत कराया गया। इस पहल के माध्यम से छात्रों को वन संरक्षण का महत्व भी समझाया गया।

कार्यक्रम में वन विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों की उपस्थिति विशेष रही। वन परिक्षेत्राधिकारी रविंद्र तिवारी, सहायक वन परिक्षेत्राधिकारी शिवेंद्र सिंह के साथ-साथ विभिन्न वनपाल और वनरक्षक भी मौजूद रहे। स्कूल के शिक्षक और अन्य कर्मचारियों ने भी कार्यक्रम में सक्रिय भागीदारी की। यह कार्यक्रम बच्चों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता बढ़ाने में सफल रहा।

शहडोल- अनूपपुर में हो रहा राखड़ का अवैध परिवहन

खुले वाहनों में हो रही ओवरलोड ढुलाई, सुप्रीम कोर्ट के आदेश की कर रहे अवहेलना

मीडिया ऑडीटर, शहडोल एजेंसी। शहडोल और अनूपपुर जिले में पर्यावरण संरक्षण नियमों का लगातार उल्लंघन हो रहा है। अमरकंटक थर्मल पावर केंद्र चर्चाई के राखड़ बांध से निकलने वाली राखड़ को खुले वाहनों में अवैध रूप से ले जाया जा रहा है। यह केन्द्रीय वन और पर्यावरण मंत्रालय के निर्देशों के खिलाफ है।

कैम्पल से परिवहन की है गाइडलाइन: सुप्रीम कोर्ट के आदेश पर 28 अगस्त 2019 को जारी गाइडलाइन में स्पष्ट निर्देश दिए गए थे कि राखड़ का परिवहन केवल कैम्पल जैसे बंद वाहनों में ही किया जाएगा। खुले ट्रक या हाईवा में राखड़ का परिवहन पूरी तरह प्रतिबंधित है। त्रिपाल से ढंकना भी पर्याप्त नहीं माना जाता है।

अमलाई, धनपुरी और चर्चाई थाना क्षेत्र में 24 घंटे चलने वाले इस अवैध परिवहन पर स्थानीय पुलिस, परिवहन विभाग और प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के अधिकारी चुप्पी साधे हुए हैं।



क्षमता से डेढ़ गुना अधिक परिवहन: केंद्र सरकार ने भारी वाहनों सहित ट्रकों की भार वाहन सीमा को बढ़ाने और माल ढुलाई के लिए फिटनेस सर्टिफिकेट को भी अनिवार्य कर दिया था। केंद्र का यह आदेश केवल नए वाहन ही नहीं, बल्कि पुराने वाहनों में लागू होगा। छह चक्का ट्रक (सामने के धुरी में दो पहियों और पीछे के चार पहियों) का वजन मौजूदा 16.2 टन से

बढ़ाकर 19 टन कर दिया गया है। इसी प्रकार 10 चक्का ट्रक के लिए वजन 25 टन से बढ़ाकर 28.5 टन कर दिया गया है। 12 चक्का ट्रक के लिए 31 टन से बढ़ाकर 36 टन कर दिया गया है। 14 चक्का ट्रक के लिए वाहन वजन 37 टन से बढ़ाकर 43.5 टन कर दिया गया है। 18 चक्का ट्रक के लिए 42.2 से बढ़ाकर 47.5 टन कर दिया गया है। वहीं 22 चक्का ट्रेलरों के

लिए 49 से 55 टन कर दिया गया है।

यहां से हर दिन निकल रहे हैं वाहन: चर्चाई थाना क्षेत्र के विवेक नगर, रेस्क्यू कॉलोनी, आमाटोला, बापू चौक, इन्द्रागर क्षेत्र के अलावा धनपुरी नंबर 3 के रास्तों से गुजरते हैं। अनूपपुर की एक ओर शहडोल के दो निकायों की रियायती बस्ती से खुले में राखड़ उड़ाते हुए अनफिट वाहन दौड़ रहे हैं।

बिना वर्दी 5 पुलिसकर्मियों ने जबरन गाड़ी में बैठाया

थाने में ले जाकर धमकाया, पैदल व्यक्ति का 300 रुपए चालान काटने का आरोप



मीडिया ऑडीटर, पन्ना निप्र। अजयगढ़ थानाक्षेत्र अंतर्गत कछियाना मोहल्ले में एक व्यक्ति ने पुलिस पर पैदल चलते समय हेलमेट चालान काटने का आरोप लगाया है। पीड़ित ने बीते 7 जनवरी को एसपी साई कृष्णा एस थोटा से पुलिसकर्मियों के खिलाफ शिकायत दर्ज कराई थी। जिसके बाद एसपी थोटा ने मामले की जांच एसडीओपी राजीव सिंह को सौंपी थी। जिसे लेकर एसडीओपी ने शनिवार को कहा कि पुलिस कभी भी पैदल चलने वालों का चालान नहीं काटती है। आरोप निराधार है।

खड़ी बाइक का नंबर देख



चालान काटने का आरोप: दरअसल, सुशील शुक्ला (50) निवासी कछियाना ने एसपी साई कृष्णा एस थोटा से शिकायती पत्र में कहा- वह बीते 4 जनवरी को शाम करीब 7.30 बजे अपनी बेटी के जन्मदिन पर साथियों को न्योता देकर पैदल घर लौट रहे थे। इसी दौरान बिना वर्दी वाले पांच पुलिसकर्मियों ने उन्हें जबरन गाड़ी में बैठाकर थाने ले गए। जिसके बाद थाने में उन्हें धमकाया, इसके बाद एक खड़ी बाइक का नंबर देखकर बिना हेलमेट का 300 रुपए का चालान काट दिया। उन्होंने प्रभानी निरीक्षक पर फर्जी केस में

युवा दिवस पर होगा सामूहिक सूर्यनमस्कार का आयोजन

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। युवा दिवस के अवसर पर 12 जनवरी 2025 को सामूहिक सूर्य नमस्कार का आयोजन किया जावेगा। जिलास्तरीय कार्यक्रम शासकीय उत्कृष्ट उच्चतर मा.वि. क्रमांक 1 सीधी के मैदान में सम्पन्न कराया जायेगा।

इस कार्यक्रम में प्रातः 8.30 से 9 बजे के मध्य छात्रों एवं अन्य अतिथियों का एकत्रीकरण होगा जिसमें छात्रों एवं अन्य अतिथियों को अपने निर्धारित स्थलों पर बैठने की व्यवस्था की जायेगी। इसके पश्चात अतिथिगणों द्वारा दीप प्रज्वलन किया जायेगा। साथ ही माँ सरस्वती एवं स्वामी विवेकानंद जी के चित्रों पर माल्यार्पण अतिथियों द्वारा किया जायेगा।

तदुपश्चात 9.25 से 9.30 तक अतिथिगणों का उद्बोधन पश्चात 9.30 मिनट से 10.15 मिनट के मध्य राष्ट्रीय गाने मातरम का गायन स्वामी विवेकानंद जी की वाणी, मुख्यमंत्री जी का संदेश, सामूहिक सूर्य नमस्कार तथा 10.15 से 10.30 बजे तक आभार एवं कार्यक्रम समापन किया जायेगा।

नाबालिग से दुष्कर्म के आरोपी को 20 साल की सजा

अनूपपुर कोर्ट ने मुख्य आरोपी पर 10 हजार का जुर्माना भी लगाया



मीडिया ऑडीटर, अनूपपुर निप्र। अनूपपुर की विशेष पाँक्सो अदालत ने नाबालिग से दुष्कर्म के एक संगीन मामले में दो आरोपियों को दोषी करार देते हुए सख्त सजा सुनाई है। मुख्य आरोपी पारस वासुदेव (28) को 20 साल का कठोर कारावास और 10 हजार रुपए का जुर्माना लगाया गया है। जबकि, मामा परसु उर्फ पकसु वासुदेव (48) को 3 साल की कैद और 4 हजार रुपए के जुर्माने की सजा दी गई है। घटना 22 दिसंबर 2023 की रात की है।

आरोपी पारस और उसका मामा पकसु बाइक से पीड़िता के घर पहुंचे। पारस ने पीड़िता को शारीरिक दमन किया, लेकिन उसके मना करने पर दोनों ने जबरन उसे बाइक

पर बैठाकर गांव बटूरा स्थित पारस के घर ले गए। वहां पारस ने पीड़िता के साथ रात भर रेप किया। अगले दिन उसे घर में बंद कर चला गया और शाम को लौटने पर पीड़िता को जान से मारने की धमकी दी। पीड़िता ने अपने माता-पिता को घटना की जानकारी दी, जिसके बाद थाना जैतहरी में शिकायत दर्ज कराई गई।

पुलिस ने दोनों आरोपियों के खिलाफ केस दर्ज किया। विशेष न्यायालय पाँक्सो एक्ट के न्यायाधीश नरेंद्र पटेल ने दोनों पक्षों की दलीलें सुनने के बाद आरोपियों को दोषी पाया और सजा सुनाई। मामले में जिला अभियोजन अधिकारी हेमंत अग्रवाल ने पैरवी की।

मीडिया ऑडीटर, छतरपुर निप्र। छतरपुर में पुलिस ने सोशल मीडिया पर अवैध हथियार के साथ फोटो शेयर करने वाले एक युवक को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है। सरवई थाना पुलिस को शुक्रवार रात सूचना मिली थी कि नांद गांव के पास नहर की पुलिया के निकट एक युवक अवैध हथियार लेकर घूम रहा है।

थाना प्रभारी अतुल झा के नेतृत्व में पुलिस टीम ने मौके पर पहुंचकर आरोपी को घेराबंदी कर पकड़ लिया। आरोपी की पहचान फतेहपुर गांव निवासी रवि यादव के रूप में हुई, जो कैलाश यादव का बेटा है। पुलिस ने तलाशी के दौरान रवि के पास से 315 बोर का देशी कट्टा और एक कारतूस बरामद किया है।

आरोपी को जेल भेजा गया: जांच में पता चला कि आरोपी ने पहले भी अवैध हथियार के साथ अपनी तस्वीरें और वीडियो सोशल मीडिया पर शेयर किए थे। पुलिस ने आर्मस एक्ट के तहत मामला दर्ज कर शनिवार को दोपहर में आरोपी को न्यायालय में पेश किया, जहां से उसे जेल भेज दिया गया।

अलग-अलग सड़क हादसों में दो युवकों की मौत

ब्यौहारी में ट्रैक्टर से गिरा 30 वर्षीय युवक, जयसिंहनगर में ट्रक ने बाइक सवार को कुचला



मीडिया ऑडीटर, शहडोल निप्र। शहडोल में दो अलग-अलग सड़क दुर्घटनाओं में शुक्रवार को दो युवकों की दर्दनाक मौत हो गई। पहली घटना ब्यौहारी थाना क्षेत्र के देवरीडोल गांव में हुई। जहां ट्रैक्टर से गिरने के कारण राजेश विश्वकर्मा (30) की मौत हो गई। राजेश ट्रैक्टर में सवार होकर घर जा रहे थे। घायल अवस्था में उन्हें ब्यौहारी सिविल हॉस्पिटल ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया।

दूसरी घटना जयसिंह नगर थाना क्षेत्र के सेमरा पेटोल पंप के पास हुई। कन्नी निवासी रिकू सिंह गांड बाइक से बाजार जा रहे थे, तभी एक तेज रफ्तार ट्रक ने उन्हें कुचल दिया। हादसे में रिकू की मौके पर ही मौत हो गई। पेटोल पंप कर्मचारियों की सूचना पर पहुंची पुलिस को मौके से ट्रक चालक फरार मिला। पुलिस दोनों मामलों की जांच कर रही है और फरार ट्रक चालक की तलाश जारी है।

लीगल एड डिफेंस काउंसिल सिस्टम अंतर्गत कार्यालय स्टॉफ की सविदा आधार पर भर्ती

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। जिला न्यायाधीश एवं सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण वीरेंद्र जोशी ने जानकारी देकर बताया कि लीगल एड डिफेंस काउंसिल सिस्टम अंतर्गत कार्यालय जिला विधिक सेवा प्राधिकरण सीधी में 01 पद कार्यालय सहायक/क्लर्क, 01 पद रिसेप्सनिस्ट सह डाटा एन्री ऑपरेटर एवं 01 पद कार्यालय भूचय के लिए सविदा आधार पर 01 वर्ष निपुणिक हेतु आवेदन पत्र 10 फरवरी सायं 05:00 बजे तक कार्यालय जिला विधिक सेवा प्राधिकरण जिला न्यायालय सीधी में आमंत्रित किये गये हैं।

सहायक/क्लर्क, 01 पद रिसेप्सनिस्ट सह डाटा एन्री ऑपरेटर एवं 01 पद कार्यालय भूचय के लिए सविदा आधार पर 01 वर्ष निपुणिक हेतु आवेदन पत्र 10 फरवरी सायं 05:00 बजे तक कार्यालय जिला विधिक सेवा प्राधिकरण जिला न्यायालय सीधी में आमंत्रित किये गये हैं।

मंत्री विजयवर्गीय ने किया दंगल प्रतियोगिता का शुभारंभ

बोले- बैढ़न के जुड़वा तालाब का करेंगे नामकरण, जिले के अखाड़ों का होगा विकास

मीडिया ऑडीटर, सिंगरौली निप्र। नगरीय प्रशासन मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने शनिवार को सिंगरौली के बैढ़न में जुड़वा तालाब पर स्थापित महाराणा प्रताप की प्रतिमा का अनावरण किया। इस अवसर पर उन्होंने घोषणा की कि जुड़वा तालाब का नामकरण महाराणा प्रताप के नाम पर किया जाएगा। मंत्री ने महापौर को इस संबंध में परिषद से प्रस्ताव बनाकर भेजने के निर्देश दिए।

कार्यक्रम के दौरान मंत्री विजयवर्गीय ने महाराणा प्रताप की वीरता का स्मरण करते हुए कहा कि उनके कारण ही सनातन धर्म सुरक्षित रहा। उन्होंने कभी भी मुगलों के सामने समर्पण नहीं किया। इसके पश्चात मंत्री बैढ़न के रामलीला मैदान पहुंचे। जहां उन्होंने



राष्ट्रीय दंगल प्रतियोगिता का विधिवत शुभारंभ किया। उन्होंने पारंपरिक अखाड़ों के महत्व पर

प्रकाश डालते हुए कहा कि असली पहलवान अखाड़ों से ही निकलते हैं। उन्होंने जिला कलेक्टर को

सिंगरौली के सभी अखाड़ों का विकास करने की योजना बनाने के निर्देश दिए।



कार्यक्रम में सीधी-सिंगरौली सांसद डॉ. राजेश मिश्रा, सिंगरौली विधायक रामनिवास शाह, देवसर

विधायक राजेंद्र भैराम, नगर निगम अध्यक्ष देवेश पांडे सहित हजारों की संख्या में लोग उपस्थित रहे।

विचार

राष्ट्रीय युवा दिवस-विकसित भारत के लिए एक विजन

भारत अपनी स्वतंत्रता के शताब्दी वर्ष-2047 की ओर आगे बढ़ रहा है, ऐसे में हमारे युवा विकसित भारत के निर्माण के हमारे मिशन में सबसे आगे हैं। बिना किसी राजनीतिक पृष्ठभूमि वाले एक लाख युवाओं को राजनीति में शामिल करने के माननीय प्रधानमंत्री के आह्वान पर, हमने राष्ट्रीय युवा महोत्सव को एक असाधारण रूप में परिकल्पित किया है- 'विकसित भारत युवा नेता संवाद 2025'। यह संवाद केवल एक आयोजन नहीं है, यह एक अभियान है, युवा सशक्तिकरण, नेतृत्व और व्यावहारिक विचारों का एक जीवंत उत्सव है, जो 'विकसित भारत' से जुड़े देश के दृष्टिकोण के अनुरूप है।

राष्ट्रीय युवा महोत्सव की परिकल्पना = दो दशकों से अधिक समय से, राष्ट्रीय युवा महोत्सव सांस्कृतिक आदान-प्रदान और युवा ऊर्जा का प्रतीक रहा है। हालांकि, इस वर्ष हमने अलग तरीके से सोचने का साहस किया। 18 नवंबर, 2024 को हमने उत्सव के प्रारूप में एक अभूतपूर्व परिवर्तन की घोषणा की, जिसके केंद्र में नेतृत्व, नवाचार और राष्ट्र-निर्माण को रखा गया। इस परिकल्पना का केंद्र है-विकसित भारत चुनौती, जो तीन चरणों वाली प्रतियोगिता है। इस प्रतियोगिता को भारत के सबसे प्रतिभाशाली युवाओं की पहचान करने और उन्हें विकसित करने के लिए सावधानीपूर्वक डिजाइन किया गया है। यह चुनौती योग्यता, समावेश और पारदर्शिता पर आधारित है, जो भौगोलिक या पृष्ठभूमि की परवाह किए बिना हर युवा भारतीय को योगदान करने का समान अवसर मिलना सुनिश्चित करती है। पहले चरण, विकसित भारत क्विज में देश भर के लगभग 3 मिलियन युवाओं ने भाग लिया। 12 भाषाओं में आयोजित इस प्रतियोगिता में पिछले दशकों में भारत की प्रगति के बारे में उनके ज्ञान का परीक्षण किया गया, जिससे समावेश और पहुंच सुनिश्चित हुई।

दूसरे चरण के तहत, विकसित भारत निबंध प्रतियोगिता में प्रतिभागियों को महत्वपूर्ण मुद्दों पर गहराई से विचार करने के लिए प्रोत्साहित किया गया। पेश किए गए 2 लाख से अधिक निबंधों में विकास के लिए प्रौद्योगिकी का लाभ उठाने, सतत विकास को अपनाने, सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने और भारत को वैश्विक खेल महाशक्ति बनाने जैसे दस विषयगत क्षेत्रों पर विचार प्रस्तुत किए गए। विशेषज्ञ पैनल द्वारा मूल्यांकित इन निबंधों ने हमारे युवाओं की रचनात्मकता, विश्लेषणात्मक सोच और मौलिकता के बारे में गहन जानकारी प्रदान की।

दिल्ली में गलत ट्रैक पर जा रही है कांग्रेस, फिर से फंस गए हैं राहुल गांधी

संतोष पाठक

देश की राजनीति के मैदान में राहुल गांधी को लगातार गलतियां करने वाले नेता के तौर पर जाना जाता है। कई बार तो राहुल गांधी जीता हुआ चुनाव भी हार जाते हैं। आरोप तो यहां तक लगाया जाता है कि राहुल गांधी के इर्द-गिर्द जो नेता रहते हैं, वे चाहते ही नहीं हैं कि राहुल गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस चुनाव जीते। इसलिए कांग्रेस के नेता लगातार राहुल गांधी को अजब-गजब फैसले लेने के लिए उत्साहित और प्रेरित करते रहते हैं। यह बात बिल्कुल सौ फीसदी सही है कि कांग्रेस के वोट बैंक को छिनकर ही आम आदमी पार्टी दिल्ली में अपराजेय पार्टी के तौर पर स्थापित हुई है लेकिन उतना ही बड़ा सच यह भी है कि कांग्रेस पार्टी अपना वह पुराना वोट बैंक आप से पूरी तरह से छिनने की स्थिति में नहीं है। ऐसे में बेहतर तो यह होता कि कांग्रेस अपने पुराने वोट बैंक को पाने के लिए फेज वाइज रणनीति बनाकर, उसे अमल में लाती लेकिन इसकी बजाय कांग्रेस रणनीतिक तौर पर एक बहुत बड़ी गलती करते हुए दिखाई दे रही है।



मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, दिल्ली विधानसभा चुनाव में अपनी खोई जमीन पाने के लिए कांग्रेस स्क्व फॉर्मूला अपनाने जा रही है। यानी कांग्रेस दिल्ली में अल्पसंख्यक अर्थात मुस्लिम बहुल सीटों के साथ ही उन विधानसभा सीटों पर फोकस करेगी, जहां-जहां ओबीसी और दलित मतदाताओं की संख्या ज्यादा है। हकीकत में कांग्रेस यहीं सबसे बड़ी गलती करने जा रही है। राहुल गांधी के करीबियों ने उन्हें यह सलाह देकर, एक बार फिर से उनके नेतृत्व में पूरी कांग्रेस पार्टी को गलत ट्रैक पर डाल दिया है। मंडल-कर्मंडल की राजनीति के दौर के बाद ओबीसी यानी अन्य पिछड़े वर्ग के मतदाता पूरी तरह से कांग्रेस से विमुख हो चुके हैं और इनकी वापसी की संभावना फिलहाल दूर-दूर तक नजर नहीं आ रही है। ऐसे में कांग्रेस के इस फॉर्मूले का असफल होना तय माना जा रहा है।

दरअसल, राहुल गांधी को कांग्रेस को फिर से मजबूत करने के लिए स्क्व की बजाय बीडीएम के फॉर्मूले को अपनाना चाहिए जिसके बल पर जवाहर लाल नेहरू और इंदिरा गांधी से लेकर राजीव गांधी और मनमोहन सिंह तक देश पर राज कर चुके हैं।

बीडीएम फॉर्मूले का मतलब है - ब्राह्मण, दलित और मुस्लिम समुदाय। इसी समीकरण के बल पर कांग्रेस ने लंबे समय तक देश पर राज किया है। लोकसभा चुनाव के समय से ही मुस्लिम मतदाताओं के बड़े वर्ग ने कांग्रेस की तरफ लौटना शुरू कर दिया है। दिल्ली में भी इस बार के विधानसभा चुनाव में मुस्लिम मतदाताओं का वोट बड़े पैमाने पर कांग्रेस

को मिलने की संभावना है और अगर कांग्रेस भाजपा को हराती हुई नजर आई तो पूरा मुस्लिम समाज कांग्रेस उम्मीदवारों को वोट देते हुए नजर आएगा। लेकिन इसके लिए कांग्रेस को बीडीएम फॉर्मूले के - ब्राह्मण और दलित को भी अपने साथ जोड़ना होगा। दिल्ली का दलित आज की तारीख में अरविंद केजरीवाल के साथ खड़ा है और उन्हें अपने पाले में लाने के लिए राहुल गांधी को बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर के मान-सम्मान की लड़ाई को और ज्यादा तेज करना पड़ेगा। ब्राह्मण मतदाताओं की बात करें तो दिल्ली में यह समाज आज की तारीख में भाजपा, आप और कांग्रेस - तीनों ही पार्टियों में बंटा हुआ है। राहुल गांधी अगर थोड़ी सी कोशिश भी करेंगे तो अन्य राजनीतिक दलों के ओबीसी राग से नाराज ब्राह्मण समाज पूरी तरह से कांग्रेस के पाले में खड़ा नजर आएगा।

बताया जा रहा है कि राहुल गांधी 13 जनवरी को दिल्ली के चुनावी मैदान में उतर कर पहली जनसभा कर सकते हैं। राहुल गांधी को जोर-शोर से दिल्ली में चुनावी जनसभाएं, रोड शो और रैलियां करनी ही चाहिए। लेकिन उन्हें कांग्रेस के पूरे चुनाव प्रचार अभियान को बीडीएम केंद्रित ही बनाना चाहिए और इसे जमीनी धरातल पर उतर कर क्रियान्वित भी करना चाहिए। गौर करने वाली बात यह है कि ब्राह्मण मतदाताओं का बड़े पैमाने पर साथ आना अन्य अगड़ी जातियों को भी कांग्रेस उम्मीदवारों को वोट देने के लिए प्रेरित कर सकता है।

‘वी.आई.पी. कल्चर’ ‘धर्मस्थलों में बंद हो’

सनातन परम्परा में हर काम ईश्वर का ध्यान करके शुरू किया जाता है और मंदिर जाना भी इसका एक हिस्सा है जहां प्रवेश करते ही ऐसी ऊर्जा प्राप्त होती है जिससे शरीर की पांच इंद्रियां (दृष्टि, श्रवण, स्पर्श, गंध और स्वाद) सक्रिय हो जाती हैं। इनका मंदिर जाने से गहरा सम्बन्ध है। मंदिर कुछ मांगने का स्थान नहीं है। वहां शांतिपूर्वक बैठकर केवल अपने आराध्य भगवान के दर्शन करने चाहिए परंतु अनेक लोग यह सोचने लगे हैं कि उन्हें भगवान के सामने अपनी मांगें रखने के लिए मंदिर जाना है।

इसी उद्देश्य से मंदिरों में कई बार भगवान के शीघ्र दर्शन पाने की लालसा से पहुंचे भक्तों की भीड़ को काबू करने के समुचित प्रबंध न होने व अन्य कारणों से भगदड़ मच जाती है जिसमें कई बार अनमोल प्राण चले जाते हैं। इसका एक उदाहरण गत 8 जनवरी को देखने को तब मिला जब आंध्र प्रदेश में स्थित 'तिरुपति मंदिर' के 'विष्णु निवास' के निकट 'तिरुमाला श्रीवारी वैकुंठ एकादशी' के पर्व पर श्रद्धालुओं को दर्शन टोकन बांटने के लिए लगाए गए काउंटरों में से कुछ काउंटरों पर अचानक उमड़ी भक्तों की भीड़ के कारण भारी भगदड़ मच जाने से 6 श्रद्धालुओं की मौत हो गई।

पुलिस के अनुसार जब टोकन जारी करने वाले एक काउंटर पर किसी कर्मचारी की तबीयत खराब हुई और उसे अस्पताल ले जाने के लिए वहां के दरवाजे खोले गए तो वहां एकत्रित श्रद्धालुओं ने समझा कि टोकन जारी करने के लिए 'क्यू लाइन' खोल दी गई है और वे तुरंत उस ओर दौड़ पड़े जो वहां भगदड़ मचने के परिणामस्वरूप दुखद मौतों का कारण बना। जहां धर्मस्थलों में दर्शनों की उतावली के कारण मचने वाली भगदड़ वहां के प्रबंधन की त्रुटियों का परिणाम है वहीं मंदिरों में दर्शनों के लिए विशिष्ट लोगों को पहले के आधार पर दर्शन करवाने की व्यवस्था भी समस्याएं पैदा करती है। इसी बारे सुप्रीमकोर्ट में एक याचिका भी विचाराधीन है जिस पर 27 जनवरी को सुनवाई होनी है। इसमें याचिकाकर्ता ने कहा है कि "मंदिरों में विशेष या जल्दी दर्शन के लिए अतिरिक्त 'वी.आई.पी. दर्शन शुल्क' वसूल करना संविधान के अनुच्छेद 14 और 21 के अंतर्गत समानता के सिद्धांत का उल्लंघन है।"

"अनेक धर्मस्थलों में 400-500 रुपए तक का अतिरिक्त शुल्क लेकर मंदिरों में देवताओं के विग्रह के अधिकतम निकटता तक जल्दी पहुंचा जा सकता है। यह व्यवस्था शारीरिक और आर्थिक बाधाओं का सामना करने वाले वी.आई.पी. प्रवेश शुल्क देने में असमर्थ साधारण भक्तों के प्रति असंवेदनशील है। इससे शुल्क देने में असमर्थ भक्तों से भेदभाव होता है। विशेष रूप से इन वंचित भक्तों में महिलाएं तथा बुजुर्ग अधिक बाधाओं का सामना करने वाले शामिल हैं।

" इसी सिलसिले में उपराष्ट्रपति श्री जगदीप धनखड़ ने भी 7 जनवरी को धर्मस्थल (कर्नाटक) में स्थित श्री मंजूनाथ मंदिर में देश के सबसे बड़े 'क्यू काप्सलैक्स' (प्रतीक्षा परिसर) का उद्घाटन करते हुए कहा कि, "हमें विशेष रूप से मंदिरों में वी.आई.पी. कल्चर को समाप्त करना चाहिए, क्योंकि वी.आई.पी. दर्शन का विचार ही देवत्व के विरुद्ध है।" "जब किसी को वरीयता और प्राथमिकता दी जाती है और जब हम उसे वी.वी.आई.पी. या वी.आई.पी. कहते हैं तो यह समानता की भावना को कमतर करने के समान है। वी.आई.पी. कल्चर एक पथभ्रष्टता है। यह एक अतिक्रमण है। समानता के नजरिए से देखा जाए तो समाज में इसका कोई स्थान नहीं होना चाहिए। धार्मिक स्थानों में तो बिल्कुल भी नहीं।"

श्री धनखड़ ने ठीक ही कहा है क्योंकि ऐसी स्थिति में समानता की भावना को त्याग कर चंद धर्मस्थलों के कुछ पुजारी अपने आपको ही भगवान समझने लगते हैं जो कदापि उचित नहीं है।

ताकि बची रहे सांस्कृतिक बहुलता

उमेश चतुर्वेदी

बीसवीं सदी के भाषा दार्शनिकों में लुडविग विट्गेंस्टाइन का नाम गंभीरता से लिया जाता है। लुडविग ने भाषा को लेकर अनेखी बात कही है, 'मेरी भाषा की सीमा का अर्थ है, मेरी दुनिया की चौहद्दी।' इसका साफ मतलब यह है कि हर व्यक्ति की अपनी भाषा दरअसल उसकी दुनिया होती है। ऐसी दुनिया, जिसमें सिर्फ भूगोल ही शामिल नहीं है, इतिहास भी है और संस्कृति भी, जिसमें परंपरा भी शामिल है और सदियों का अपना एक्सक्लूसिव ज्ञान भी। जिस तरह नदियां अपने उद्गम और अपने प्रवाह वाले इलाकों की पूरी संस्कृति और पर्यावरण के अथाह गुणों को खुद में समोए रहती हैं, भाषाएं भी नदी की भांति ही अपनी परंपरा, अपनी सोच, अपने दर्शन, अपने भूगोल और अपने इतिहास के साथ ही समूची संस्कृति को लेकर प्रवाहित होती रही हैं।

यहां सवाल उठ सकता है कि भाषाओं को लेकर ऐसी बातों का संदर्भ क्या है? दरअसल संयुक्त राष्ट्र संघ के संगठन यूनेस्को ने भाषाओं को लेकर जो ताजा रिपोर्ट जारी की है, उसमें कहा गया है कि हर दो हफ्ते बाद दुनिया की एक भाषा मर रही है। यूनेस्को के अनुसार, पहले जहां हर तीन महीने के अंतराल पर एक भाषा की मौत की खबर आती थी, वहीं साल 2019 के बाद इस गति में तेजी आई है। यूनेस्को के मुताबिक, इस दर से हर साल दुनिया से करीब नौ भाषाओं का अस्तित्व खत्म होते जा रहा है। साफ है कि अगर एक भाषा मर रही है तो दरअसल उस भाषा की अपनी विशिष्ट संस्कृति, उसकी अपनी सोच और उसका अपना परिवेशबोध मर रहा है। इन अर्थों में देखें तो

भाषाओं का इस तरह मरते जाना दरअसल संस्कृतियों के बहुलवादी स्वरूप का संकुचित होते जाना है।

यूनेस्को के अनुसार साल एक हजार ईस्वी तक दुनियाभर में नौ हजार से कुछ ज्यादा भाषाएं अस्तित्व में थीं। जिनकी संख्या घटते-घटते आज सात हजार के आसपास सिमट गई है। यूनेस्को को आशंका है कि भाषाओं के मरने की यही दर बनी रही तो 21वीं सदी के अंत तक दुनियाभर की करीब तीन हजार भाषाओं का अस्तित्व खत्म हो चुका होगा। भाषाओं के जानकारों के अनुसार, यूनेस्को का यह आकलन उम्मीदों से भरा है। जबकि पश्चिम के कई भाषा और मानवशास्त्री मानते हैं कि अगर भाषाओं के मरने की गति ऐसी ही रही तो साल 2200 ईस्वी तक दुनियाभर में महज 100 भाषाएं ही जीवित रह पाएंगी। भाषाओं के लुप्त होने को लेकर भारत में एक अवधारणा यह है कि जो भाषा क्लिष्ट या कठिन होती जाती है, वह लोकव्यवहार में खत्म होते जाती है। संस्कृत भाषा के बारे में नहीं कह सकते कि वह खत्म हो चुकी है, लेकिन उसका चलन घट गया है। एक खास धारा की वैचारिकी और भाषा दार्शनिक संस्कृत के चलन से बाहर होने के लिए उसके गंभीर होते जाने का उदाहरण देते हुए भाषाओं के लुप्त होने का सिद्धांत गढ़ते रहे हैं। लेकिन क्या सचमुच भाषाएं सिर्फ इसी वजह से खत्म हो रही हैं कि वे क्लिष्ट या कठिन होती जा रही हैं? आधुनिक संदर्भों में देखें तो यह तर्क सही नहीं लगता। अंग्रेजी को ही लीजिए। कठिन अंग्रेजी बोलना शान का प्रतीक माना जाता है। इस लिहाज से तो उसे भी चलन से दूर होना चाहिए था। लेकिन उलटे वह बढ़ रही है।



आधुनिक विश्व में सबसे बेहतरीन व्यवस्था लोकतंत्र को माना जा रहा है। लेकिन यह लोकतंत्र सिर्फ राजनीतिक संदर्भों तक ही सिमटता जा रहा है। विश्व ग्राम में बदली दुनिया में हर देश में एकरूपता बढ़ती जा रही है। संस्कृतियां और उनकी अपनी विशिष्ट परंपराएं रोजाना के व्यवहार का विषय नहीं रहीं। उदारीकरण और वैश्वीकरण की

वजह से पूरी दुनिया तकरीबन एक तरह से खानपान, एक तरह के पहनावे और एक तरह की भाषा की ओर आकर्षित होती जा रही है। पश्चिमी सभ्यता और उसका सलीका ही मानक बनते जा रहे हैं। इस लिहाज दुनियाभर की बोलियों में भी एकरूपता कभी सायासिक, तो कभी अनायास ही होती जा रही है। इस पूरी प्रक्रिया में छोटे समुदायों

की भाषाएं लगातार किनारे होते जा रही हैं। चूंकि रोजी और रोजगार के लिए छोटे समुदायों की भाषाएं सहयोगी नहीं रह पाई हैं तो उनका चलन रोजाना की ज़िंदगी से कम होता जा रहा है और भाषाएं मर रही हैं। इसमें हर देश की अपनी केंद्रीय भाषा जहां केंद्रीय भूमिका में हैं, वहीं उसके देसज रूप लगातार या तो कमजोर हुए हैं या फिर लुप्त हो रहे हैं। कथित आधुनिक सोच इस प्रवृत्ति को और बढ़ावा दे रही है। भारत में अंग्रेजी इस आधुनिकता की वाहक है। इसी तरह कुछ प्रमुख भाषाएं अपने-अपने क्षेत्रों में आधुनिकता का केंद्रीय तत्व बन चुकी हैं।

इस पूरी प्रक्रिया में बहुत ऐसी भाषाएं हैं, जो इतने कम लोगों द्वारा बोली जाती हैं कि निकट भविष्य में उनका अस्तित्व ही नहीं रहेगा। यूनेस्को की रिपोर्ट 'एटलस-लुप्तप्राय भाषाएं' के अनुसार भारत में तीन ऐसी भाषाएं हैं, जिनके अस्तित्व पर संकट आ खड़ा हुआ है। इसमें पहले नंबर पर कर्नाटक की कोरगा है, जिसे बोलने वालों की संख्या महज सोलह हजार ही है। इसी तरह हिमाचल प्रदेश की सिरमौरी भाषा है, जिसे महज 31 हजार लोग ही बोलते हैं। इस सूची में तीसरे स्थान पर छत्तीसगढ़ की पारजी भाषा है, जिसे सिर्फ पचास हजार लोग बोल रहे हैं। जाहिर है कि इन भाषाओं के अस्तित्व पर संकट आ खड़ा हुआ है। एकीकरण के दौर में रोहिंयया लोगों की भाषा हनीफी पर मरने के कगार पर है। यूरोप में ऐसे ही अस्तित्व के संकट से आयरिश, सिसिली और यिडिश भाषाएं भी जूझ रही हैं। हमें याद रखना चाहिए कि भाषाओं की गहन विविधता सांस्कृतिक विविधता को ना सिर्फ सुनिश्चित करती है

लिव-इन में रह रही महिला को चाकू से गोदा प्रेमी ने 6 से ज्यादा वारकर किया लहूलुहान, 24 घंटे में 3 वारदात

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर एजेंसी। छत्तीसगढ़ के बिलासपुर में तलाक के बाद पति को छोड़कर लिव-इन-रिलेशनशिप में रह रही महिला पर प्रेमी युवक ने चाकू से ताबड़तोड़ हमला कर दिया। महिला गंभीर रूप से घायल हो गई है। वारदात के बाद आरोपी युवक उसे छोड़कर भाग गया।

महिला को इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है। वहीं, शहर के सरकंडा थाना क्षेत्र में बीते 24 घंटे में चाकूबाजी की 3 वारदात हो गई, जिसमें छह लोग घायल हैं। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

तलाक के बाद लिव-इन में रह रही थी महिला: सरकंडा के बंगालीपारा में रहने वाली नीलू कश्यप (30) टिफिन सेंटर चलाकर गुजर-बसर करती हैं। वह एक बच्चे के साथ किराए के मकान में रहती हैं। महिला का उसके पति से तलाक हो गया है। जिसके बाद वह सनत कश्यप नाम के युवक के साथ लिव-इन में रहती थी।

मोबाइल पर बात कर रही थी, तभी किया चाकू से 6 वार: बताया जा रहा है कि महिला शुक्रवार



की रात किसी काम से सीपत चौक की ओर गई थी। वहां से लौटते समय वह परिचित से मोबाइल पर बात कर रही थी। तभी सनत कश्यप आया। उसने महिला पर अचानक चाकू से ताबड़तोड़ हमला कर दिया। इससे महिला गंभीर रूप से घायल हो गई। महिला पर हमलावर ने 6 वार किए। आसपास के लोग जब वहां पहुंचे तो युवक भाग निकला। घटना की जानकारी मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंच गई। जिसके बाद घायल महिला को अस्पताल में

भर्ती कराया गया। पुलिस हमलावर युवक की तलाश कर रही है।

8 दिन पहले की थी युवक के खिलाफ शिकायत: महिला की बहन ने पुलिस को बताया कि सनत आए दिन उसकी बहन को परेशान कर रहा था। इसकी शिकायत नीलू ने नारी शक्ति की टीम के साथ सरकंडा थाने में की थी। इस पर तत्काल कार्रवाई करते हुए सरकंडा पुलिस की टीम सनत की तलाश में लग गई। इस दौरान वह अपने घर पर नहीं मिला। उसके परिजन को पुलिस

ने समझाइश देकर युवक के खिलाफ कार्रवाई की चेतावनी थी। इसके बाद से युवक कुछ दिनों तक शांत रहा। अचानक ही उसने नीलू पर हमला कर दिया।

इधर नाबालिग स्कूली छात्रों के बीच चाकूबाजी: महिला पर जानलेवा हमला के अलावा सरकंडा में शुक्रवार सुबह चिंगराजपारा स्कूल चौक के पास नाबालिग छात्रों ने 2 जुड़वा भाइयों पर चाकू से हमला कर दिया। शिव टॉकिज चौक निवासी 16 वर्षीय अभिषेक और आदित्य



श्रीवास जुड़वा भाई हैं।

वे आत्मानंद स्कूल चिंगराजपारा में पढ़ते थे। रोहित रजक व रोहन साहू से किसी बात को लेकर उनका पुराना विवाद था। शुक्रवार सुबह रोहित व रोहन ने घर बुलाकर उन पर ताबड़तोड़ चाकू से हमला कर दिया। घटना में गर्दन और पीठ पर चोट आई हैं। दोनों घायलों को निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

अशोक नगर में युवक ने दो लोगों को चाकू मारा अशोक नगर अटल आवास पानी टंकी के पास

युवती से विवाद के दौरान बीच बचाव करने आए दो युवकों पर बदमाश ने चाकू से हमला कर दिया। घटना गुरुवार शाम साढ़े 5 बजे की है। अटल आवास निवासी कान्हा यादव, एक युवती से विवाद कर रहा था। गाली-गलौज सुनकर ओमप्रकाश ध्रुव, विकास यादव और पवन यादव बीच बचाव करने पहुंचे। इसी दौरान कान्हा ने ओमप्रकाश और विकास पर चाकू से हमला कर दिया। दोनों घायलों को सिम्स में भर्ती कराया गया है।

एक साल से बिक रहा था गौ-मांस

डायरी में तारीख के साथ मिला हिसाब-किताब, गृहमंत्री बोले-ऐसे लोगों को उल्टा लटकाकर सीधा करेंगे

मीडिया ऑडीटर, रायपुर एजेंसी। छत्तीसगढ़ में गायों के अवैध परिवहन और मांस बेचने पर बैन लगा हुआ है। इसके बावजूद रायपुर के मोमिनपारा में पिछले एक साल से गायों को मारकर मांस बेचा जा रहा था। जब हिंदू संगठन ने हंगामा किया, तब इसका खुलासा हुआ। अब आजाद चौक पुलिस ने दो महिला समेत 8 लोगों को गिरफ्तार किया गया है।

दरअसल, एक मोमिनपारा के एक मकान में गौ-मांस लाकर लोगों को सप्लाई किया जा रहा था। घर में मिले हिसाब-किताब डायरी में फरवरी 2024 की तारीख लिखी हुई है। किसी कितना मांस दिया गया, यह भी लिखा है। वहीं, गृहमंत्री विजय शर्मा का कहना है कि, ऐसे लोगों को उल्टा लटकाकर सीधा करेंगे।

गौ-सेवकों की शिकायत पर



पुलिस ने दो थी दबिश: दो दिन पहले गौ-सेवकों ने एक घर पर गौ-मांस काटे जाने की शिकायत पुलिस से की थी। पुलिस ने रेड मारी तो घर से कई टुकड़ों में गौ-मांस मिला। तीन कमरों में गौ-मांस काटने का काम चल रहा था। मौके से तराजू, काटने



का सामान और सप्लाई होने वालों की लिस्ट मिली है। पुलिस घर के पास में ही खड़े एक आँटो को भी जब्त किया। जिसमें खून के धब्बे मिले।

पुलिस ने आरोपियों का निकाला जुलूस: पुलिस ने एफआईआर दर्ज कर कोलकाता



बंगाल निवासी समीर मंडल, मोमिनपारा निवासी खुर्शीद अली, मोह. मुंताजिर हैदर, अशफाक अली, अरमान हैदर, मोह. इरशाद कुरैशी, महिला आरोपी बिलकिस बानो और एरम जेहरा को पकड़ा है। पुलिस ने आरोपियों का जुलूस भी निकाला।

झड़वर ने किया 12वीं की छात्रा से दुष्कर्म, किडनैप कर रायपुर दोस्त के मकान ले गया, 4 दिनों तक करता रहा रेप

मीडिया ऑडीटर, कोरबा एजेंसी। छत्तीसगढ़ के कोरबा जिले में 12वीं के छात्रा का अपहरण कर दुष्कर्म की वारदात सामने आई है। नाबालिग छात्रा 6 दिनों पहले स्कूल जाने के नाम से घर से निकली थी। लेकिन जब वह घर नहीं लौटी तो परिजनों ने खोजबीन शुरू की। स्कूल, रिश्तेदारों और आसपास तलाश करने पर भी छात्रा का कुछ पता नहीं चला। इसके बाद परिजनों बेटी की गुमशुदगी की रिपोर्ट मांिकपुर चौकी में दर्ज कराई। पुलिस ने शुक्रवार को छात्रा को रायपुर से बरामद किया और आरोपी युवक को गिरफ्तार कर लिया है। पेशे से झड़वर आरोपी ने छात्रा को रायपुर में दोस्त के मकान में रखा था।

छात्रा को जबरदस्ती रायपुर ले



गया युवक: जानकारी के मुताबिक आरोपी घनश्याम केवट (24) छात्रा को जबरदस्ती रायपुर ले गया था। आरोपी रायपुर में 4 दिनों से नाबालिग छात्रा को अपने कब्जे में रखे हुए था। नाबालिग छात्रा 12वीं कक्षा का पढ़ाई कर रही है। स्कूल जाने के नाम से घर से साइकिल से निकली थी। उसने साइकिल को एक साइकिल दुकान में बनवाने के लिए दिया। छात्रा जब काफी समय बीत जाने के बाद भी घर नहीं पहुंची तब परिजन परेशान हुए।

बिलासपुर में क्रेन ने मासूम को कुचला, मौत झड़वर ने बिना देखे गाड़ी पीछे की, खेलते-खेलते चपेट में आया डेढ़ साल का बच्चा

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर एजेंसी। बिलासपुर में खेलते-खेलते डेढ़ साल का बालक क्रेन के पहिए के नीचे आ गया, जिससे उसकी मौके पर ही मौत हो गई। घटना सिटी कोतवाली थाना क्षेत्र की है। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

दयालबंद में केसरी पाइप फैक्ट्री है, जहां मजदूर अपने परिवार के साथ रहते हैं। परिसर में ही पाइप का काम भी चलता है। बताया जा रहा है कि शनिवार की सुबह करीब 11 बजे लेकर संजय कुमार का डेढ़ साल का बेटा वैभव अंदर खेल रहा था। वह खेलते-खेलते परिसर में रखे क्रेन के पास पहुंच गया।

झड़वर ने बिना देखे बैक किया, पहिए के नीचे आ गया मासूम: इस दौरान वहां काम भी



चल रहा था। तभी घर पर बैठे झड़वर उसे पीछे करने लगा। वह पीछे खेल रहे बालक को नहीं देख पाया। बिना पीछे देखे उसने क्रेन को बैक करने लगा, जिससे मासूम बालक पहिए के नीचे आ गया। इस हादसे में बालक का सिर कुचला गया। उसकी हालत



देखकर परिजन उसे सिम्स लेकर गए, जहां उसे मृत बता दिया गया। घटना की जानकारी मिलते ही पुलिस भी मौके पर पहुंच गई। पुलिस इस मामले की जांच कर रही है।

फैक्ट्री में मजदूरों की सुरक्षा पर सवाल: इस हादसे के बाद

फैक्ट्री के कामगारों की सुरक्षा पर भी सवाल उठने लगा है। कहा जा रहा है कि फैक्ट्री में ही मजदूरों के रहने की व्यवस्था की है। लेकिन, हादसा होने की स्थिति में मजदूर और उनके परिवार की सुरक्षा का कोई इंतजाम नहीं है।

रायपुर नगर निगम के डिप्टी कमिश्नर के ट्रांसफर पर रोक

नगरीय प्रशासन विभाग ने सीनियर अफसर का जूनियर पद पर तबादला, हाईकोर्ट ने दी राहत

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर एजेंसी। हाईकोर्ट ने रायपुर नगर निगम के डिप्टी कमिश्नर कृष्णा खटिक के तबादला आदेश पर रोक लगा दी है। दरअसल, नगरीय प्रशासन विभाग ने नियमों को दकितान कर सीनियर अफसर को जूनियर पद पर ट्रांसफर कर दिया है। बता दें कि याचिकाकर्ता का तबादला नगर पालिका महासमुंद में सीएमओ के पद पर किया गया था।

राज्य शासन के नगरीय प्रशासन विभाग ने हाल ही में अफसरों का ट्रांसफर आदेश जारी किया है। इस तबादला आदेश में राज्य शासन की तय सेवा शर्तों का उल्लंघन किया गया है। इसमें राज्य शासन के अफसर अपने ही बनाए नियमों और शर्तों का पालन नहीं कर रहे हैं। ऐसे ही रायपुर नगर निगम में पदस्थ डिप्टी कमिश्नर



कृष्णा खटिक का तबादला महासमुंद सीएमओ के पद पर किया गया है, जो जूनियर पद है। **ट्रांसफर आदेश को हाईकोर्ट में दी चुनौती:** नगरीय प्रशासन विभाग में ग्रेड एए अधिकारी कृष्णा

खटिक ने एडवोकेट संदीप दुबे के माध्यम से हाईकोर्ट में याचिका दायर की है, जिसमें उन्होंने तबादला आदेश के माध्यम से ग्रेड डिमोशन करने को चुनौती दी। इसमें बताया कि नगरपालिका

महासमुंद सीएमओ का पद उससे जूनियर रैंक के अफसर की है। याचिकाकर्ता ग्रेड के अफसर हैं। लेकिन, राज्य शासन ने ट्रांसफर आदेश के जरिए उन्हें ग्रेड पर काबिज है। लेकिन, शासन ने

से डिमोशन है। याचिकाकर्ता ने कहा कि सीएमओ पद पर ग्रेड रैंक के अफसर की पदस्थापना की जानी चाहिए। एडवोकेट संदीप दुबे ने कोर्ट को बताया कि याचिकाकर्ता का तबादला आदेश राज्य शासन के नगर पालिका (कार्यपालिका/इंजीनियरिंग/स्वास्थ) सेवा, भर्ती और सेवा की शर्तें नियम, 2017 के विरुद्ध हैं।

जूनियर अफसर को बना दिया सीनियर: याचिकाकर्ता ने अपनी याचिका में इस बात की भी जानकारी दी है कि प्रदेश में ग्रेड के चार सीएमओ हैं। इनमें लोकेश्वर साहू प्रभारी संयुक्त संचालक, सुदेश सुंदरानी भी संयुक्त संचालक, राजेंद्र दोहरे डिप्टी सीईओ सुझा हैं। याचिकाकर्ता ने बताया कि वर्तमान में वह डिप्टी कमिश्नर निगम रायपुर के पद पर काबिज है। लेकिन, शासन ने

ट्रांसफर आदेश में जूनियर अफसरों को सीनियर पदों पर पदस्थ कर दिया है।

हाईकोर्ट ने तबादला आदेश पर लगाई रोक: याचिकाकर्ता ने कोर्ट को बताया कि प्रदेश में जूनियर श्रेणी के 18 सीएमओ ऊंचे पद पर कार्यरत हैं। राज्य सरकार चाहें तो इनमें से किसी भी एक को महासमुंद नगरपालिका सीएमओ के पद पर तबादला किया जा सकता है। इनमें से किसी अफसर को ना भेजकर एए श्रेणी के सीनियर अफसर को महासमुंद सीएमओ बनाकर भेजा जा रहा है जो राज्य शासन द्वारा तय सेवा शर्तों का उल्लंघन है। इस मामले की सुनवाई करते हुए जस्टिस एके प्रसाद की सिंगल बेंच ने याचिकाकर्ता को राहत देते हुए तबादला आदेश पर रोक लगा दिया है।

धान की सरकारी खरीदी का दुरुपयोग

1.78 करोड़ का अवैध धान जब्त, 76

व्यापारियों और कोचियों पर कार्रवाई



मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर एजेंसी। बिलासपुर में धान खरीदी में बड़ा घोटाला सामने आया है। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय सरकार की 3100 रुपए प्रति क्विंटल की धान खरीदी का गलत फायदा उठाने का प्रयास विफल हो गया। कलेक्टर अरुण शरण के निर्देश पर पिछले 52 दिनों में की गई छापामार कार्रवाई में 4561 क्विंटल अवैध धान बरामद किया गया, जिसकी कीमत लगभग 1.78 करोड़ रुपए है।

खाद्य एवं सहकारिता विभाग की संयुक्त टीम ने इस कार्रवाई में 16 व्यापारियों और 60 कोचियों के खिलाफ मंडी अधिनियम के तहत मामला दर्ज किया है। खासतौर पर मस्तूरी विकासखंड के धान उपार्जन केंद्र सेवा सहकारी समिति देवरी में की गई जांच में 13 लाख रुपए मूल्य का 428.4 क्विंटल अवैध धान पकड़ा गया।

राइस मिलों में धान खपाने में कोचिए और व्यापारी हुए असफल: जांच में सामने आया कि कोचिए और व्यापारी राइस मिलों में धान खपाने में असफल होने के बाद सोसायटियों का सहारा ले रहे थे। देवरी सोसायटी में ऑनलाइन खरीदी के आंकड़ों से मिलान करने पर 1071 कट्टी अतिरिक्त धान मिला, जिसे फर्जी तरीके से किसानों के खातों में दर्ज करने की योजना बनाई गई थी।

प्रशासन द्वारा की गई कार्रवाई में कोड़िया केंद्र से 230.8 क्विंटल, बोड़सरा से 762.2 क्विंटल, देवरी से 428.4 क्विंटल और घुटकू से 280 क्विंटल धान जब्त किया गया। कुल मिलाकर 1691.8 क्विंटल धान जब्त किया गया। प्रशासन की कार्रवाई निरंतर जारी है और सहकारिता विभाग द्वारा नियमानुसार आगे की कार्रवाई की जाएगी।

तेज रफ्तार ट्रेलर ने मासूम को रौंदा

ढाबाडीह में ढाई साल के बच्चे की मौत, आक्रोशित ग्रामीणों ने किया चक्काजाम



मीडिया ऑडीटर, बलौदा बाजार एजेंसी। बलौदाबाजार के ढाबाडीह गांव में एक दर्दनाक सड़क हादसे ने मासूम की जान ले ली। शनिवार सुबह करही से बलौदाबाजार की ओर आ रहे तेज रफ्तार ट्रेलर ने सड़क किनारे खेल रहे ढाई साल के शिवम रजक को रौंद दिया, जिससे उसकी मौके पर ही मौत हो गई।

मुक्त जांजगीर-चांपा जिले के जेवरा मुलमुला गांव निवासी मन्नु रजक का बेटा था, जो अपने रिश्तेदार के यहां आया हुआ था।

हादसे के बाद गुस्सा ग्रामीणों ने सड़क पर उतरकर चक्काजाम कर दिया, जिससे यातायात पूरी तरह बाधित हो गया। सिटी कोतवाली पुलिस ने मौके पर पहुंचकर उचित कार्रवाई का आश्वासन दिया, जिसके बाद ग्रामीणों ने जाम खत्म किया। ग्रामीणों ने ट्रेलर चालक के खिलाफ कड़ी कार्रवाई, भारी वाहनों की रफ्तार पर नियंत्रण और संवेदनशील इलाकों में सुरक्षा इंतजामों की मांग की है।

अंबिकापुर की सड़कों का साढ़े 4 करोड़ में डामरीकरण कलेक्टर और आयुक्त ने किया निरीक्षण, कहा- गुणवत्ता खराब मिली तो सीधे कार्रवाई होगी



मीडिया ऑडीटर, सरगुजा एजेंसी। अंबिकापुर नगर निगम क्षेत्र की 17 सड़कों के डामरीकरण का कार्य शुरू कर दिया गया है। इन सड़कों के डामरीकरण के लिए 4.47 करोड़ रुपए की स्वीकृति मिली है। नगर निगम के प्रशासक और कलेक्टर विलास भोस्कर ने डामरीकरण कार्य का निरीक्षण किया।

कलेक्टर ने कहा कि सड़कों की गुणवत्ता से समझौता नहीं होगा। गड़बड़ी मिली तो सीधे कार्रवाई होगी।

अंबिकापुर नगर निगम क्षेत्र की सड़कें लंबे समय से खराब हैं। इनमें से 17 सड़कों के डामरीकरण और मरम्मत का काम शुरू कर दिया गया है। कलेक्टर एवं नगर निगम प्रशासक विलास भोस्कर ने नगर निगम की टीम के साथ कार्यों का निरीक्षण किया। उन्होंने नवापारा में चल रहे सड़क डामरीकरण का निरीक्षण किया और स्वयं गुणवत्ता की जांच भी की।

कलेक्टर ने कहा- समय पर पूरा करें काम: कलेक्टर ने सभी कार्य गुणवत्ता के साथ समय पर पूरा करने का निर्देश दिया। कलेक्टर ने कहा कि कार्यों को समयसीमा में पूर्ण किया जाए और गुणवत्ता से किसी तरह का समझौता ना किया जाए। गुणवत्ता में खामी हो तो लोग सीधे उनसे शिकायत कर सकते हैं।

इन सड़कों का डामरीकरण-

गांधीनगर नाका से नवापारा चौक तक, नवापारा चौक से कोईरा दुकान तक- 49.49 लाख
सिंचाई कालोनी से शिव मंदिर तक डामरीकरण- 35.00 लाख
मनेन्द्राढ़ रोड से बिशुनपुर बिजली ऑफिस-39.79 लाख
बिशुनपुर बिजली ऑफिस से कन्या परिसर गेट तक-20.21 लाख
बिशुनपुर/गंगापुर में बीटी पैच कार्य 10.33 लाख
गोधनपुर पुलिया से गोधनपुर चौक तक डामरीकरण-35.00 लाख
साई मंदिर से विधायक प्रबोध मिज के घर तक-48.25 लाख
नगर निगम कार्यालय से शंकर फ्रूट तक- 34.23 लाख
गुदरी बाजार तिराहा सड़क डामरीकरण-8.72 लाख
माया लॉज से जेत तिराहा तक सड़क डामरीकरण-27.89 लाख
संगीत सागर चौक से चान्दी तक-30.00 लाख
गंगापुर वार्ड में सड़क डामरीकरण कार्य 19.83 लाख
सतीपारा रोड में कैलाश मोड़ तक- 32.12 लाख,
सतीपारा रोड में कैलाश मोड़ से ब्रह्म मंदिर रियेयरिंग-3.88 लाख
रिंग रोड से मंदिरा दुकान तक (शिकारी रोड)-19.83 लाख
फॉरेस्ट रियर रोड में बीटी पैच कार्य लागत 7.63 लाख

दिल्ली शराब नीति पर सीएजी रिपोर्ट

नई दिल्ली (एजेंसी)। विधानसभा चुनाव से 25 दिन पहले दिल्ली में शराब नीति को लेकर (कंप्ट्रोलर एंड ऑडिटर जनरल ऑफ इंडिया) की रिपोर्ट लीक हुई है। इसमें सरकार को 2026 करोड़ रुपए का रेवेन्यू लॉस होने की बात कही गई है। इंडिया टुडे ने दावा किया है कि रिपोर्ट की कॉपी उसके पास है। रिपोर्ट में बताया गया है कि शराब नीति में काफी गड़बड़ियां थीं, जिनमें लाइसेंस देने में खामी भी शामिल है। इसके साथ ही आप लीडर्स को कथित तौर पर घूस के जरिए फायदा पहुंचाया गया। रिपोर्ट में बताया गया है कि डिप्टी चीफ मिनिस्टर जिस ग्रुप ऑफ मिनिस्टर्स की अगुआई कर रहे थे, उसने एक्सपर्ट पैनल के सुझावों को खारिज कर दिया था। कैबिनेट ने नीति को मंजूरी दे दी थी और कई अहम फैसलों पर तब के उप-राज्यपाल की मंजूरी भी नहीं ली गई थी। रिपोर्ट के मुताबिक, शिकायतों के बावजूद सभी को नीलामी की बोली लगाने की मंजूरी दे दी गई थी। जिन्हें घाटा हुआ था, उन्हें भी लाइसेंस दे दिए गए या रिन्यू कर दिए गए थे। सीएजी रिपोर्ट को अभी दिल्ली विधानसभा में रखा जाना है।

असम खदान हादसा, छठे दिन 3 शव मिले

दीमा हसाओ (एजेंसी)। इनमें से 2 की पहचान नहीं हो सकी है। शनिवार सुबह 27 साल के लिजान मगर का शव पानी पर तैरता मिला था। वह दीमा हसाओ के कलामती गांव नंबर 1 का निवासी था। इससे पहले बुधवार को नेपाल के रहने वाले गंगा बहादुर श्रेठ का शव मिला था। एनडीआरएफ की टीम शनिवार सुबह पानी का लेवल चेक करने गई थी, तभी उन्हें लिजान मगर का शव तैरता दिखा। उसे सुबह करीब 7३0 बजे बाहर निकाला गया। खदान में पानी का लेवल 6 मीटर कम हो गया है। 5 पंप से रात भर पानी निकाला गया।। इधर, असम सीएम हिमंता बिस्वा सरमा का कहना है कि यह अवैध खदान नहीं थी, बल्कि 12 साल पहले बंद कर दी गई थी। तीन साल पहले तक असम खनिज विकास निगम के अधीन थी। 6 जनवरी को पहली बार मजदूर खदान में घुसे थे। 3 किलो उमरांगसो में बनी इस खदान में 6 जनवरी को पानी भर गया था। जिससे वहां काम कर रहे रैट होल माइनर्स फंस गए। बाकी बचे 5 मजदूर के लिए रेस्क्यू ऑपरेशन आज भी जारी है।

घने कोहरे के कारण दिल्ली-कर्में 133 ट्रेनें लेट

नई दिल्ली (एजेंसी)। देश के 16 राज्यों में लगातार दूसरे दिन घना कोहरा देखने को मिला। कई शहरों में दोपहर तक भी धुंध देखने को मिली। दिल्ली के कुछ इलाकों में विजिबिलिटी 0 रिकॉर्ड की गई। इससे 45 ट्रेनें लेट हुईं। यूपी के भी कई जिलों में विजिबिलिटी 100 मीटर तक घट गई। कानपुर स्टेशन पर करीब 88 ट्रेनें अपने निर्धारित समय पर नहीं पहुंच पाईं। दिल्ली और यूपी मिलाकर कुल 133 ट्रेनें लेट रहीं। जम्मू-कश्मीर और हिमाचल प्रदेश में बर्फबारी के कारण मैदानी इलाकों में सर्दी तेज हो गई है। मध्य प्रदेश के शहडोल में तापमान 2.8 डिग्री रिकॉर्ड किया गया।

तमिलनाडु गवर्नर को हटाने के लिए सुप्रीम कोर्ट में याचिका

चेन्नई (एजेंसी)। तमिलनाडु के राज्यपाल को हटाने को लेकर सुप्रीम कोर्ट में याचिका लगाई गई है। जिसमें राष्ट्रपति के सचिव और अन्य को उन्हें टीएन रवि को वापस बुलाने का निर्देश देने की मांग की गई है। याचिका में दावा किया गया है कि रवि ने राज्यपाल के दायित्वों का पालन नहीं किया और लगातार संविधान का उल्लंघन किया है।

याचिका लगाने वाले एडवोकेट सीआर जया सुकिन ने कहा- राज्यपाल 6 जनवरी को अपना पारंपरिक संबोधन दिए बिना ही विधानसभा से चले गए। राज्यपाल ने



संबोधन की शुरुआत में राष्ट्रगान बजाने कहा था, जबकि ऐसा आदेश देना उनका कर्तव्य नहीं है।

दरअसल, 6 जनवरी से शुरू हुए

तमिलनाडु विधानसभा सत्र के पहले दिन राज्यपाल ने बिना संबोधन के वॉकआउट कर दिया था। जिसका राज्य के छरूसमेत अन्य मंत्रियों ने भी विरोध किया। स्टालिन ने यह भी कहा था कि यह बचकाना और लोकतांत्रिक परंपराओं का उल्लंघन है।

आरएन रवि ने 2021 में तमिलनाडु के राज्यपाल बनाए गए थे। तब से लेकर अब तक कई मुद्दों पर राज्य की एमके स्टालिन सरकार और उनके बीच विवाद हो चुका है। स्टालिन सरकार का आरोप है कि राज्यपाल भाजपा प्रवक्ता की तरह काम कर रहे हैं।

कॉमेडी एक्टर टीकू तलसानिया की हालत गंभीर

मुंबई (एजेंसी)। बॉलीवुड और गुजराती सिनेमा के मशहूर कॉमेडी एक्टर टीकू तलसानिया की शनिवार सुबह क्रिटिकल कंडीशन में अस्पताल में भर्ती करवाया गया था। खबरें थीं कि उन्हें हार्ट अटैक आया है, हालांकि अब उनकी पत्नी दीप्ति ने हार्ट अटैक की खबरों को नकार दिया है। एक्टर की पत्नी ने कहा कि उन्हें ब्रेन स्ट्रोक आया है। 70 साल के टीकू तलसानिया की पत्नी दीप्ति ने एनडीटीवी से बातचीत में कहा- उन्हें हार्ट अटैक नहीं, बल्कि ब्रेन स्ट्रोक हुआ था। वह एक फिल्म की स्क्रीनिंग देखने गए थे और रात 8 बजे



के आसपास उनकी तबीयत खराब होने लगी। उन्हें तुरंत अस्पताल में भर्ती कराया गया। टीकू का इलाज मुंबई के कोकिलाबेन धीरूभाई अंबानी अस्पताल में चल रहा है।

सीएम मान ने उठाया क्रॉस बॉर्डर तस्करी-नशे का मुद्दा

चंडीगढ़ (एजेंसी)। पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान ने केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह की अध्यक्षता में नशा तस्करी और राष्ट्रीय सुरक्षा जैसे अहम मुद्दों पर आयोजित एक महत्वपूर्ण बैठक में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से भाग लिया। इस बैठक में देश के सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के प्रतिनिधि मौजूद थे। जहां नशा तस्करी और सुरक्षा से जुड़े विषयों पर सकारात्मक और व्यापक चर्चा हुई। मुख्यमंत्री भगवंत मान ने गृह मंत्री अमित शाह को पंजाब की नशे के खिलाफ सख्त नीतियों और इस दिशा में राज्य द्वारा प्राप्त सफलता के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि पंजाब, जो एक सीमावर्ती राज्य है, नशा तस्करी और इसके दुष्प्रभावों को रोकने के लिए प्रतिबद्ध है। मुख्यमंत्री ने यह भी कहा कि राष्ट्रीय सुरक्षा और



नशा तस्करी की समस्या को जड़ से खत्म करने के लिए केंद्र सरकार और राज्य सरकार के बीच सहयोग बेहद महत्वपूर्ण है। उन्होंने केंद्र सरकार से इस संबंध में सहयोग की अपेक्षा जताई और विश्वास दिलाया कि पंजाब इस दिशा में मिलकर काम करने के लिए पूरी तरह से वचनबद्ध है।

इस दौरान बातचीत हुई कि

पंजाब, अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण, इस को तस्करी से प्रभावित रहा है। लेकिन, राज्य सरकार ने इसे रोकने के लिए कड़े कदम उठाए हैं। मुख्यमंत्री ने बैठक के दौरान यह भी बताया कि सीमाओं पर निगरानी और सतर्कता बढ़ाने के साथ-साथ नशे के खिलाफ जागरूकता अभियान चलाए जा रहे हैं।

पंजाब में आप विधायक की गोली लगने से मौत

लुधियाना (एजेंसी)। आप विधायक गुरप्रीत बस्सी को उनके बेटे विश्वास बस्सी ने मुखाग्नि दी। अंतिम संस्कार में मुख्यमंत्री भगवंत मान समेत अन्य नेता शामिल हुए। पंजाब में लुधियाना की वेस्ट विधानसभा सीट से आम आदमी पार्टी के विधायक गुरप्रीत गोगी (57) की शुक्रवार देर रात 12 बजे गोली लगने से मौत हो गई। वह खाना खा रहे थे। अचानक उनके कमरे से गोली चलने की आवाज आई। पत्नी सुखचैन कौर और बेटा विश्वास दूसरे कमरे में थे। वह दौड़कर गए तो गोगी खून से लथपथ कमरे में गिरे हुए थे। अस्पताल पहुंचने



तक उनकी मौत हो गई। शनिवार दोपहर (11 जनवरी) उनका डीएमसी अस्पताल में पोस्टमॉर्टम कराया गया। सीएम मान ने कहा- गोगी कभी भी जिसमें पता चला कि गोली उनके सिर के दाईं तरफ से लगी और बाईं तरफ से बाहर निकलकर आर-पार हो गई।

तमिलनाडु विधानसभा सत्र के पहले दिन राज्यपाल ने बिना संबोधन के वॉकआउट कर दिया था। जिसका राज्य के छरूसमेत अन्य मंत्रियों ने भी विरोध किया। स्टालिन ने यह भी कहा था कि यह बचकाना और लोकतांत्रिक परंपराओं का उल्लंघन है।

आरएन रवि ने 2021 में तमिलनाडु के राज्यपाल बनाए गए थे। तब से लेकर अब तक कई मुद्दों पर राज्य की एमके स्टालिन सरकार और उनके बीच विवाद हो चुका है। स्टालिन सरकार का आरोप है कि राज्यपाल भाजपा प्रवक्ता की तरह काम कर रहे हैं।

प्रयागराज (एजेंसी)। प्रयागराज महाकुंभ में दीक्षा लेने वाली 13 साल की लड़की का संन्यास 6 दिन में ही वापस हो गया। दीक्षा दिलाने वाले महंत कौशल गिरि को जून अखाड़े से 7 साल के लिए निष्कासित कर दिया गया। उन्होंने नाबालिग को गलत तरीके से शिष्य बनाया था। श्रीपंचदशनाम जूना अखाड़ा के संरक्षक हरि गिरि महाराज ने कहा- यह अखाड़े की परंपरा नहीं रही है कि किसी नाबालिग को संन्यासी बना दें। इस मुद्दे पर बैठक कर सर्वसम्मति से फैसला लिया गया है।

प्रयागराज महाकुंभ में दीक्षा लेने वाली 13 साल की लड़की का संन्यास 6 दिन में ही वापस हो गया। दीक्षा दिलाने वाले महंत कौशल गिरि को जून अखाड़े से 7 साल के लिए निष्कासित कर दिया गया। उन्होंने नाबालिग को गलत तरीके से शिष्य बनाया था। श्रीपंचदशनाम जूना अखाड़ा के संरक्षक हरि गिरि महाराज ने कहा- यह अखाड़े की परंपरा नहीं रही है कि किसी नाबालिग को संन्यासी बना दें। इस मुद्दे पर बैठक कर सर्वसम्मति से फैसला लिया गया है।

संजय राउत बोले- महाराष्ट्र निकाय चुनाव अकेले लड़ेंगे

मुंबई (एजेंसी)। इंडिया. ब्लॉक में बढ़ती रार के बीच शिवसेना के राज्यसभा सांसद संजय राउत ने शनिवार को कहा कि पार्टी मुंबई और नागपुर महानगरपालिका के चुनाव अकेले लड़ेगी। उन्होंने कहा, हम मुंबई और नागपुर महानगरपालिका अपने दम पर लड़ेंगे; जो भी होगा, हमें खुद देखना होगा। उद्धव ठाकरे ने हमें संकेत दिया है। मैंने अभी-अभी हमारे नागपुर शहर अध्यक्ष प्रमोद मनमोड़े से इस बारे में चर्चा की है। राउत ने कहा, %वह फैसला लोकल लेवल पर पार्टी मजबूत करने के लिए लिया गया है।



लोकसभा और विधानसभा चुनाव में कार्यकर्ताओं को मौका नहीं मिलता। इससे पार्टी की ग्रोथ प्रभावित हो रही है। हमें नगर निगम, जिला परिषद और नगर

पंचायत में अपने दम पर लड़ना चाहिए और अपनी पार्टी को मजबूत करना चाहिए। इससे पहले उन्होंने शुक्रवार को कहा था, इंडिया गठबंधन की तरह महाराष्ट्र चुनाव में भी एमवीए के बीच कोई तालमेल नहीं था।

राउत कल बोले थे- कांग्रेस बताए इंडिया ब्लॉक वजूद में है या नहीं संजय राउत ने शुक्रवार को कहा था, मैं उमर अब्दुल्ला से सहमत हूं। यदि इंडिया. ब्लॉक सहयोगियों को लग रहा है कि अब इसका कोई वजूद नहीं है तो इसके लिए कांग्रेस को जिम्मेदार ठहराया जाना चाहिए।

महाराष्ट्र सीएम फडणवीस ने शरद पवार को चाणक्य कहा

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने एएसपी चीफ शरद पवार की तारीफ करते हुए उन्हें राजनीतिक का चाणक्य बताया है। दरअसल, पवार ने 9 जनवरी को ऋष की तारीफ की थी। उन्होंने कहा था कि आरएसएस की वजह से भाजपा चुनाव जीती। हमें भी उनके जैसा केंडर बनाना होगा। फडणवीस ने कहा- शरद पवार चाणक्य हैं। उन्होंने महसूस किया होगा कि लोकसभा चुनाव में महाविकास अभाड़ी की ओर से फेक नैरेटिव फैलाया गया था, जो विधानसभा चुनावों में पंचर हो गया।

कोरोना वायरस जैसे एचएमपीवी के देश में 16 केस

नई दिल्ली (एजेंसी)। कोरोना वायरस जैसे ह्यूमन मेटाన్यूमोवायरस के देश में कुल 16 मामले हो गए हैं। शनिवार को असम में पहला केस सामने आया। यहां 10 महीने का बच्चा पॉजिटिव है। बच्चे का डिब्रूगढ़ में असम मेडिकल कॉलेज और अस्पताल (एएमसीएच) में इलाज चल रहा है। उसकी हालत स्थिर है। डॉ. ध्रुवज्योति भुइयां ने बताया कि बच्चे

को चार दिन पहले सर्दी-जुकाम के लक्षणों के चलते सरकारी अस्पताल में भर्ती कराया गया था। इसके अलावा पुडुचेरी में भी एक तीन साल का बच्चा एचएमपीवी पॉजिटिव पाया गया, लेकिन वह अब पूरी तरह से ठीक है। देश में एचएमपीवी के सबसे ज्यादा 4 मामले गुजरात में हैं। महाराष्ट्र में 3, कर्नाटक और तमिलनाडु में 2-2, यूपी, राजस्थान, असम और

बंगाल में एक-एक केस सामने आया है। एचएमपीवी केस बढ़ने पर अब राज्यों ने भी सतर्कता बढ़ा दी है। पंजाब में बुजुर्गों और बच्चों को मास्क पहनने की सलाह दी गई है। इधर, गुजरात में अस्पतालों में आइसोलेशन वार्ड बनाए जा रहे हैं। हरियाणा में भी स्वास्थ्य विभाग के एचएमपीवी केसेस पर निगरानी रखने के आदेश दिए गए हैं।



पवार को पता है कि यह शक्ति लगातार राजनीति नहीं करती है, ये राष्ट्र का निर्माण कर रही है। कई बार

अपने विरोधी की भी तारीफ करनी पड़ती है, इसी वजह से ऋष की तारीफ की होगी।' उन्होंने शरद पवार और उनके भतीजे डिप्टी छरूअजित पवार के एक होने की चर्चा पर कहा- पिछले 5 साल में महाराष्ट्र की राजनीति में जो भी घटनाएं घटी हैं, उससे ये समझना चाहिए कि राजनीति में कुछ भी मुमकिन है। उद्धव वहां (कांग्रेस के साथ) जा सकते हैं, अजित यहां आ सकते हैं। कोई अगर दावा करें कि ऐसा नहीं होगा, तब राजनीतिक परिस्थितियां तुन्हें कहां ले जाकर बिठा देगी इसका भरोसा नहीं है।'

संजय सिंह बोले- प्रवेश वर्मा ने अपना ऐंड्रेस देकर फर्जी वोटर बाईडी की एप्लीकेशन दी

नई दिल्ली (एजेंसी)। आप सांसद संजय सिंह ने शनिवार सुबह भाजपा पर विधानसभा चुनाव में धांधली के आरोप लगाए। संजय सिंह ने कहा कि भाजपा दिल्ली के बाहर से लोगों को लाकर उनके वोटर आईडी बनवा रही है। इस धांधली में भारत सरकार के केंद्रीय मंत्री और भाजपा के सांसद शामिल हैं। संजय सिंह ने कहा- भाजपा चुनाव आयोग की आंखों में धूल झाँक रही है। भाजपा चुनाव आयोग की प्रतिष्ठा के साथ खिलवाड़ कर रही है। भाजपा नेता पहले सांसद थे।

अब वे सांसद नहीं हैं। वे 8 महीने से सांसद का बंगला कब्जाकर बैठे हैं। संजय सिंह ने एक डॉक्यूमेंट दिखाकर दावा किया कि प्रवेश वर्मा ने बंगले के पते पर 35 वोटर आईडी बनवाने की एप्लीकेशन दी है इसके अलावा केंद्रीय मंत्री पंकज चौधरी, कमलेश पासवान, भाजपा सांसद जयप्रकाश हरदोई ने भी दिल्ली में अपने-अपने बंगले पर 25 से ज्यादा वोटर आईडी बनवाने की एप्लीकेशन दी है। संजय सिंह ने कहा कि ऐसे फ्राड करके ही मोदी चुनाव जीतते हैं।

महू आने के पहले माफी मांगें राहुल गांधी : वीडी शर्मा

भोपाल (एजेंसी)। भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा ने कहा है कि राहुल गांधी महू आने से पहले माफी मांगें कि हम 55 साल तक सरकार में होने के बाद भी बाबा साहब के सम्मान में कुछ नहीं कर पाए। केंद्रीय मंत्री अमित शाह पर कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष आरोप लगाते हैं लेकिन वे नहीं जानते कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और केंद्रीय मंत्री अमित शाह ने संविधान के लिए जो किया वह देश हित के लिए किया वीडी शर्मा ने कहा कि जीतू पटवारी बोलते समय यह सोच लें कि किसके लिए क्या बोल रहे हैं। कांग्रेस जिस प्रकार से तुष्टिकरण की राजनीति करती है और इसके ऐसे अभियान चलाने का काम करते हैं जिनमें वे कहते कुछ और करते कुछ हैं।

झुट परोसना और परसेप्शन बनाना कांग्रेस की नीति: दरअसल, महू में होने वाली रैली



के पहले कांग्रेस ने शनिवार को केंद्रीय मंत्री अमित शाह पर आरोप लगाए। इन पर बीजेपी के प्रदेश अध्यक्ष शर्मा ने पलटवार किया। प्रदेश बीजेपी दफ्तर में मीडिया से चर्चा में कहा- झुट परोसना और परसेप्शन बनाना कांग्रेस की नीति रही है। इसका जवाब जनता ने समय-समय पर दिया है। जवाहर

लाल नेहरू और कांग्रेस ने बाबा साहब अंबेडकर का अपमान किया। वीडी शर्मा ने कहा कि बाबा साहब ने जब नेहरू मंत्रिमंडल से इस्तीफा दिया था तो सदन में उन्हें बोलने तक नहीं दिया गया। संविधान बनाने वाले बाबा साहब को इस अधिकार से कांग्रेस ने वंचित किया था। बाबा साहब ने

लिखा कि केवल मुसलमानों की चिंता की गई लेकिन एससी-एसटी की चिंता नहीं की गई है। प्रधानमंत्री ने केवल तुष्टिकरण के लिए काम किया है। केवल वोट पॉलिटिक्स नहीं बल्कि समाज में बाबा साहब और गांधी के विचारों को जमीन पर कैसे उतारा जाए, इसके लिए बीजेपी काम करती है।

ये है सानिया मिर्जा की फेवरेट डेट पार्टनर

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत की टेनिस स्टार सानिया मिर्जा सोशल मीडिया पर काफी एक्टिव रहती हैं। वह अपने फैस और चाहने वालों के बीच हर पल बनी ही रहती हैं। तलाक होने के बाद भी सानिया ने जिंदगी जीना नहीं छोड़ा बल्कि वो बड़े ही जिंदादिली के साथ अपनी जिंदगी जी रही हैं। भले ही सानिया सिंगल हो लेकिन इससे उनको जिंदगी में प्यार कम नहीं है। उन्होंने 9 जनवरी को इंस्टाग्राम पर अपने पसंदीदा शख्स के साथ तस्वीर शेयर की और बताया कि वह उनकी पसंदीदा डेट है। हालांकि, ये शख्स उनका बेटा इजहान नहीं बल्कि कोई और है। इस दौरान सानिया ने अपनी इस पोस्ट के जवाब में आंसू वाले इमोजी मिले।

टीम इंडिया के ऐलान में हो सकती है देरी

नई दिल्ली (एजेंसी)। अगले महीने 19 फरवरी से चैंपियंस ट्रॉफी 2025 का आगाज होगा। इस टूर्नामेंट में कुल 8 टीमों हिस्सा ले रही हैं। वहीं चैंपियंस ट्रॉफी की मेजबानी पाकिस्तान के हाथ में है। इस टूर्नामेंट के आईसीसी ने सभी टीमों को 12 जनवरी तक का समय दिया है जिससे वो अपने स्क्रॉड का ऐलान कर सके। ऐसे में फैस को भी टीम इंडिया के ऐलान का बेसब्री से इंतजार है। वहीं टीम इंडिया के ऐलान को लेकर एक बड़ा अपडेट सामने आया है। दरअसल, भारतीय टीम चैंपियंस ट्रॉफी से पहले इंग्लैंड के खिलाफ तीन मैचों की वनडे सीरीज खेलने जा रही है। इस सीरीज को लेकर टीम इंडिया के ऐलान में देरी होने की संभावना है। क्रिकबज के रिपोर्ट के अनुसार माना जा रहा था कि आईसीसी के दिशा निर्देशों के आधार पर भारतीय टीम के स्क्रॉड का ऐलान 12 जनवरी

सानिया मिर्जा भले ही खेल की दुनिया से ताल्लुक रखती हैं लेकिन बॉलीवुड में भी उनके कई दोस्त हैं। फिल्म डायरेक्टर और कोरियोग्राफर फरहा खान उनकी करीबी दोस्तों में शामिल हैं। ये दोस्ती सालों पुरानी है और फराह खान के जन्मदिन के मौके पर सानिया ने ये भी बता दिया कि फराह ही वह शख्स हैं जिनके साथ वह हमेशा डेट पर जाती रहती हैं। 9 जनवरी को फराह खान का जन्मदिन होता है। इस मौके पर सानिया ने फराह के साथ तस्वीर शेयर की। उन्होंने इस तस्वीर को शेयर करते हुए लिखा कि, सबकी पसंदीदा, खास तौर पर मेरी फेवरेट को जन्मदिन मुबारक। मेरी फोरएवर डेट फराह खान कुंदर। ये स्टोरी फराह खान ने भी शेयर की।

तक किया जा सकता है। लेकिन अब अजीत अगरकर की अगुवाई वाली चयन समिति इसमें देरी कर सकती है। वे टीम ऐलान की आखिरी तारीख को आगे बढ़ाने का अनुरोध कर सकते हैं। हालांकि, आगामी पांच मैचों की टी20 सीरीज के लिए टीम का ऐलान पहले कर दिया जाएगा। आईसीसी के टूर्नामेंट में भाग लेने वाली टीमों को कम से कम एक महीने पहले अपने अंतरिम स्क्राड का ऐलान करना होता है। हालांकि, अंतरिम स्क्रॉड में बदलाव करने की इजाजत दी जाती है। लेकिन इस बार आईसीसी ने सभी टीमों के पांच हफ्ते पहले ही स्क्राड का ऐलान करने को कहा है। भारतीय टीम ने हाल ही में ऑस्ट्रेलिया का दौरान किया था। जहां टीम इंडिया ने पांच मैचों की सीरीज खेती है। इस सीरीज का हवाला देते हुए ड्रष्ट्ट द्वारा ज्यादा समय के लिए अनुरोध किए जाने की उम्मीद है।

हिमा दास ने 18 साल की उम्र में रच दिया था इतिहास

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय एथलीट हिमा दास आज यानी की 09 जनवरी को अपना 24वां जन्मदिन मना रही हैं। हिमा दास को %डिंग एक्सप्रेस% के नाम से भी जाना जाता है। वह भारतीय एथलीट हैं और विशेष रूप से 400 मीटर दौड़ में अपनी शानदार उपलब्धियों के लिए जानी जाती हैं। जिंदगी के सारे संघर्षों को मात देकर हिमा दास ने देश के लिए ऐतिहासिक मेडल हासिल किया। असम के नागीन जिले में 09 जनवरी 2000 को हिमा दास का जन्म हुआ था। बता दें कि हिमा दास को गांव की गलियों से निकालकर अंतरराष्ट्रीय स्तर

लाने का श्रेय उनके बचपन के कोच निपुन दास को जाता है। निपुन दास ने हिमा दास के परिवार को मनाया और उनको ट्रेनिंग के लिए उन्हे गुवाहाटी ले आए। बता दें कि हिमा दास ने अंडर-20 के 400 मीटर दौड़ में गोल्ड मेडल जीतकर खेल की दुनिया में अपना नाम बनाया। इसके बाद हिमा दास चर्चा में आ गई और महज 18 साल की उम्र में गोल्ड मेडल जीतने के बाद उनका नाम गूंजने लगा। उन्होंने 51.46 सेकंड का समय लेकर गोल्ड मेडल जीता और दिलचस्प बात यह थी कि यह हिमा दास का व्यक्तिगत सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन नहीं था।

स्मृति मंधाना ने रचा इतिहास, अपने नाम दर्ज किया ये रिकॉर्ड

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय महिला टीम और आयरलैंड के बीच राजकोट में पहला वनडे मैच खेला गया। जिसमें भारत ने आयरलैंड को 6 विकेट से मात देकर बेहतरीन जीत अपने नाम की। पहले बल्लेबाजी करते हुए आयरलैंड ने 50 ओवर में 7 विकेट पर 238 रन बनाए। जिसके जवाब में भारतीय टीम ने आसानी से लक्ष्य को हासिल कर लिया। वहीं इस दौरान टीम इंडिया की अगुवाई कर रही स्मृति मंधाना ने इतिहास रच दिया। इस मुकाबले में टीम इंडिया ने अच्छी शुरुआत की और स्मृति मंधाना और प्रतिका रावल ने बतौर ओपनर 70 रन जोड़े। स्मृति मंधाना 29 गेंदों पर 41 रन बनाकर आउट हुईं। साथ ही मंधाना ने अपने वनडे करियर में 4हजार रनों का अंकड़ा भी बार कर लिया। इसकी बाद बीसीसीआई ने अपने अधिकारिक सोशल मीडिया अकाउंट से स्मृति मंधाना के



लिए पोस्ट भी शेयर किया। इस पोस्ट में मंधाना को 4000 रन पूरे होने पर बधाई दी गई। आयरलैंड के खिलाफ पहले वनडे में मंधाना ने 29 गेंदों में 41 रनों की ताबडतोड़ पारी खेली। उन्होंने अपनी पारी में 6

आईसीसी के इस कदम से गेंदबाजों को होगा फायदा

नई दिल्ली (एजेंसी)। आईसीसी गेंदबाजों के पक्ष में काम करने जा रही है। दरअसल, साउथ अफ्रीका के दिग्गज क्रिकेटर और पूर्व कप्तान शांन पोलाक ने कहा कि, आईसीसी क्रिकेट समिति गेंदबाजों को वाइड पर थोड़ी ज्यादा छूट देने की दिशा में काम कर रही है। इसके पीछे का कारण मौजूदा नियम उन पर बहुत सख्त है, विशेषकर तब जबकि बल्लेबाज आखिरी क्षणों में मूवमेंट करते हैं। वनडे और टी20 में बल्लेबाज गेंदबाज की लाइन और लेंथ को बिगाड़ने के लिए क्रीज पर आखिरी पलों में मूवमेंट करते हैं जिससे अक्सर गेंद वाइड हो जाती है।

पोलाक ने पीटीआई से कहा कि, मैं आईसीसी क्रिकेट समिति का हिस्सा हूं और हम वाइड गेंद पर गेंदबाजों के लिए कुछ और छूट लाने पर विचार कर रहे

हैं। मुझे लगता है कि इसको लेकर नियम गेंदबाजों के प्रति बहुत सख्त हैं।

पोलाक ने आगे कहा कि, अगर कोई बल्लेबाज आखिरी मिनट में उछलता है तो ये वास्तव में गेंदबाजों के लिए आदर्श स्थिति नहीं होती है। मुझे लगता है कि एक गेंदबाज को अपने रन अप की शुरुआत में ये जानना जरूरी है कि वह कहां गेंदबाजी कर सकता है।

उन्होंने आगे कहा कि, मौजूदा नियमों के अनुसार अगर गेंदबाज के गेंद छोड़ने से तुरंत पहले बल्लेबाज अपनी जगह बदलता है तो इसमें गेंद वाइड दे दी जाती है। मैं इस नियम में थोड़ा बदलाव चाहता हूं। इस 51 वर्षीय ऑलराउंडर ने कहा कि गेंदबाजों को रन अप के समय पता होना चाहिए कि उसे कहां गेंदबाजी करनी है।



बीसीसीआई पर मुंबई पुलिस का करोड़ों रुपये बकाया, बॉम्बे हाई कोर्ट की फटकार के बाद किया ये वादा



नई दिल्ली (एजेंसी)। दुनिया की सबसे महंगी क्रिकेट बोर्ड बीसीसीआई पर मुंबई पुलिस का करोड़ों रुपये बकाया है। जिसके बाद बोर्ड ने शुक्रवार को बॉम्बे हाईकोर्ट को सूचित कर दिया है कि वह आईपीएल के मैचों के दौरान पुलिस सुरक्षा प्रदान करने के लिए मुंबई, पिंपरी चिंचवाड़ और नवी मुंबई पुलिस को अपना सारा बकाया दो सप्ताह के भीतर चुका देगा। बीसीसीआई ने 29 अगस्त 2024 को मुंबई के आरटीआई एक्टविस्ट अनिल वेदव्यास गलगली द्वारा दायर एक जनहित याचिक का जवाब दिया है। वहीं द हिन्दू की रिपोर्ट के मुताबिक, गलगली की याचिका में महाराष्ट्र सरकार के पुलिस सुरक्षा

लागत को कम करने और 2011 से आईपीएल मैचों को प्रदान की गई पुलिस सेवाओं के बकाया को माफ करने के फैसले को चुनौती दी गई थी। अगस्त 2024 में हाई कोर्ट ने आईपीएल मैचों के लिए पुलिस सुरक्षा शुल्क की दर कम करने के महाराष्ट्र सरकार के फैसले की निंदा की थी। याचिकाकर्ता ने आरोप लगाया था कि मुंबई क्रिकेट एसोसिएशन पर 2013 से 2018 के बीच मुंबई के वानखेड़े स्टेडियम और ब्रेबोर्न स्टेडियम में आयोजित आईपीएल मैचों के दौरान पुलिस सुरक्षा के लिए अभी बी 14.82 करोड़ रुपये बकाया हैं। हालांकि, बोर्ड ने बहुत कम राशि स्वीकार की है।

बीसीसीआई ने एक हलफनामे में याचिका का जवाब दिया और कहा कि उस पर पिंपरी चिंचवाड़ पुलिस का 1.7 करोड़ रुपये, नवी मुंबई पुलिस का 3.3 करोड़ रुपये और मुंबई पुलिस का 1.03 करोड़ रुपये बकाया है। बोर्ड की ओर ये कहा गया है कि वह इस बकाया राशि की भुगतान दो सप्ताह में कर देगा। बीसीसीआई ने अपने हलफनामे में कहा है, बीसीसीआई का पुलिस के बकाया राशि से वंचित करने का कोई इरादा नहीं है और वह संबंधित पुलिस अधिकारियों के साथ खालों के समाधान के 90 दिनों के भीतर विवादित राशि का भुगतान करने का वचन देता है। बीसीसीआई केवल आईपीएल के

क्रॉलियायर, एलिमिनेटर और फाइनल मैचों, महिला प्रीमियर लीग मैचों और असाधारण परिस्थितियों में आयोजित किसी भी अन्य मैच के लिए ही पैसा देता है।

इसी दलील के साथ क्रिकेट बोर्ड ने हाई कोर्ट से गलगली द्वारा दायर याचिका को खारिज करने की मांग की, क्योंकि क्रिकेट मैचों के लिए पुलिस सुरक्षा के लिए लगाए गए शुल्क का सवाल पुलिस का फैसला था। वहीं गलगली की याचिका में कहा गया है कि वर्ष 2017 और 2018 में जारी किए गए दो सरकारी प्रस्तावों के अनुसार, आयोजकों को दोनों स्टेडियमों में आयोजित प्रत्येक टी20 और वनडे इंटरनेशनल मैच के लिए लगभग 66 लाख रुपये से 75 लाख रुपये और एक टेस्ट मैच के लिए 55 लाख रुपये का भुगतान करना था। साथ ही याचिका में आरोप लगाया गया है कि 26 जून, 2023 के परिपत्र के माध्यम से राज्य सरकार ने पूर्वव्यापी प्रभाव से आईपीएल आयोजकों के लिए सुरक्षा शुल्क 25 लाख रुपये से घटाकर 10 लाख रुपये कर दिया था और राज्य द्वारा बकाया माफ करने के इस फैसले से सरकारी खजाने को नुकसान हो रहा है।

राहुल द्रविड़ को क्यों कहा जाता है भारतीय क्रिकेट टीम की दीवार

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट टीम को %दीवार% कहे जाने वाले राहुल द्रविड़ 11 जनवरी को अपना 52वां जन्मदिन मना रहे हैं। भारतीय क्रिकेट के लिए राहुल द्रविड़ ने अनगिनत योगदान दिया है। बता दें कि संन्यास लेने के बाद भी वह इस खेल से जुड़े रहे। पहले राहुल द्रविड़ ने अंडर 19 टीम को निखारने का काम किया और अब उनकी कोचिंग में भारतीय क्रिकेट टीम टी 20 वर्ल्ड चैंपियन बनीं। तो आइए जानते हैं उनके जन्मदिन के मौके पर राहुल द्रविड़ के जीवन से जुड़ी कुछ रोचक बातों के बारे में... बता दें कि श्रीलंका के खिलाफ हृष्ट्र मैच में राहुल द्रविड़ ने विनोद कांबली को रिप्लेस किया। फिर इसके बाद उनको कभी पीछे मुड़कर देखने की जरूरत नहीं पड़ी। स्टाइलिश बल्लेबाज राहुल द्रविड़ ने एक के बाद एक कई उपलब्धि अपने नाम की और वह सचिन तेंदुलकर के साथ भारत के महान बल्लेबाज बन गए। आप यह जानकर हैरान हो जाएंगे कि अपने 16 सालों के टेस्ट करियर में उन्होंने 31,258 गेंदों का सामना किया है। क्रिकेट के सबसे लंबे फॉर्मेट में राहुल द्रविड़ से ज्यादा गेंदें किसी अन्य ने नहीं खेती हैं। यह वही रिकॉर्ड है, जिसके कारण उनको भारतीय टीम का %दीवार% कहा जाता है। इसके अलावा राहुल द्रविड़ ने अंतरराष्ट्रीय टेस्ट क्रिकेट में बल्लेबाजी के साथ-साथ फील्डिंग में भी अपना खूब नाम बनाया है। उन्होंने 210 कैच पकड़े हैं, जोकि विकेट कीपर को छोड़कर किसी फील्डर द्वारा सबसे ज्यादा कैच लेने का रिकॉर्ड है।

अगर राहुल द्रविड़ क्रीज पर डट जाते, तो गेंदबाजों की सामत आ जाती थी। क्योंकि उन्होंने अपने टेस्ट करियर में 44, 151 मिनट क्रीज पर बैटिंग करते हुए बिताया है। राहुल द्रविड़ का यह रिकॉर्ड तोड़ना नामुमकिन है। वहीं राहुल द्रविड़ एक मात्र ऐसे खिलाड़ी हुआ करते थे, जिनके क्रीज पर रहने भर से दूसरी तरफ बैटिंग कर रहे बैट्समैन में आत्मविश्वास बढ़ जाता था। क्योंकि उनके नाम टेस्ट क्रिकेट में सबसे ज्यादा शतकीय साझेदारी का रिकॉर्ड है। उन्होंने 88 बार यह कारनामा किया है। भारतीय टीम के खिलाड़ी रहे राहुल द्रविड़ के नाम टेस्ट क्रिकेट में सबसे ज्यादा 300 से अधिक रन की साझेदारी का भी रिकॉर्ड है। उन्होंने अपने 16 सालों के करियर में 6 बार ऐसा किया है। दिलचस्प बात यह है कि राहुल द्रविड़ ने एकदिवसीय क्रिकेट में भी दो बार 300 से अधिक रन की साझेदारी की है।



चोट के कारण इंग्लैंड के खिलाफ नहीं खेल पाएंगे मयंक यादव

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट टीम के युवा तेज गेंदबाज मयंक यादव इंग्लैंड के खिलाफ अगले सफेद गेंद सीरीज से बाहर हो सकते हैं। दरअसल, मयंक पीठ में चोट से जूझ रहे हैं और वो पिछले साल ही चोटिल हो गए थे। वो इस समय अपनी इंजरी से उबर रहे हैं। भारत को इंग्लैंड टीम के खिलाफ 5 टी20 और 3 वनडे मैच खेलने हैं। वहीं चोट के कारण मयंक का टीम इंडिया की टी20 टीम में शामिल होना संभव नहीं लग रहा है।

मयंग यादव ने अक्टूबर 2024 में बांग्लादेश के खिलाफ टी20 सीरीज में अपना इंटरनेशनल डेब्यू किया था। हालांकि, इस सीरीज के बाद उन्हें एक और चोट लगी और इसकी वजह से वो नवंबर 2024 में दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ टी20 सीरीज से चूट गए थे साथ ही सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी और विजय हजारे ट्रॉफी जैसे घरेलू टूर्नामेंट भी नहीं खेल पाए। टाइम्स ऑफ इंडिया की एक रिपोर्ट के



अनुसार मयंक यादव अभी भी पीठ की चोट से उबर रहे हैं और इंग्लिश टीम के खिलाफ टी20 सीरीज के लिए उनके

समय पर फिट होने की संभावना नहीं है।

22 वर्षीय मयंक को 23 जनवरी से सौराष्ट्र के खिलाफ

शुरू होने वाले रणजी ट्रॉफी के दूसरे चरण के पहले मैच के लिए दिल्ली की संभावित टीम में शामिल नहीं किया गया है। मयंक के आईपीएल 2025 के दौरान वापसी करने की उम्मीद जताई जा रही है।

बीसीसीआई के एक सूत्र ने कहा कि वह पीठ की चोट से पीड़ित हैं और इंग्लैंड सीरीज के लिए उनके फिट होने की संभावना नहीं है। उन्हें 23 जनवरी से सौराष्ट्र के खिलाफ दूसरे चरण के पहले रणजी ट्रॉफी मैच के लिए भी संभावित खिलाड़ियों में शामिल नहीं किया गया है।

फिलहाल, तेज गेंदबाज कुछ महीनों से बेंगलुरु में एनसीए में हैं जहां वो अपनी इंजरी पर काम कर रहे हैं। उन्होंने आखिरी बार 12 अक्टूबर 2023 को हैदराबाद में बांग्लादेश के खिलाफ तीसरे टी20 मैच में भारत के लिए खेला था। दिल्ली के इस तेज गेंदबाज ने आईपीएल 2024 सीजन में लखनऊ सुपर जायंट्स के लिए खेलेते हुए सुखिंबा बटोरी थीं।

पत्रकारिता का डिजिटल अरेस्ट, तहसील के सेक्शन इंचार्ज को डिजिटल बंधक बनाकर ऐंठे हजारों रुपए

रायपुर करचुलियान तहसील के सेक्शन इंचार्ज का नकल निकलने के एवज में घुसखोरी का बना वीडियो, वायरल करने की धमकी देकर कथित पत्रकारों ने बनाया मैनैजमेंट

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। जिले की खोफ खाती पत्रकारिता को कलंकित करने लगातार कुछ सेंटिंगबाज यूट्यूबर फील्ड में काम कर रहे हैं जिनके द्वारा सट्टा, जुआ, कोरेक्स के कारोबार में हाईप्रोफाइल मैनेजमेंट बनाकर इस तरह के धंधों को संरक्षण दिया जाता



हैं। वहीं कुछ यूट्यूबर गलत काम कर रहे सरकारी अधिकारियों से भी अपनी सांठगांठ करने में मशगूल रहते हैं। जिसके चलते इन दिनों पत्रकारिता

होकर कुछ वसूलीबाज यूट्यूबर एक सरकारी सेवक को डिजिटली बंधक बनाकर हजारों रुपए ऐंठ लिए . जिसका वीडियो भी पास में खड़े एक युवक ने अपने मोबाइल कैमरे में कैद कर लिया . जिसमें पत्रकारिता का डिजिटल अरेस्ट करते हुए यूट्यूबर पत्रकारों ने उक्त सरकारी कर्मचारी से हजारों रुपए की सेंटिंग बना ली। बताया जा रहा है कि रायपुर करचुलियान तहसील में पदस्थ सेक्शन इंचार्ज का रिश्तत की रकम लेते वीडियो होने की बात कहकर कुछ यूट्यूबरों ने उक्त कर्मचारी से वीडियो वायरल न करने के एवज में हजारों रुपए ठगो हैं तथा यूट्यूबरों का कर्मचारी से पैसे लेने का वीडियो पास में खड़े युवक के मोबाइल कैमरे में कैद हो गया। जिसके बाद मामले की तस्दीक एसडीएम रायपुर से की गई तो उन्होंने कर्मचारी की पहचान भी कर ली।

दरअसल यूट्यूबरों से डिजिटली अरेस्ट होने पर उन्हें पैसे देने के बाद जब सरकारी सेवक कैमरे में कैद हुआ तो उसने फिर खुद का बचाव करते हुए अपना नाम भी गलत बताया जिसके बाद उसकी पहचान के एसडीएम रायपुर से बात की गई तो उन्होंने उसकी सही पहचान की और बताया कि कर्मचारी नकल सेक्शन में काम करता है। जानकारी के मुताबिक रायपुर तहसील के सेक्शन इंचार्ज का रिश्तत की रकम लेते किसी ने वीडियो बनाया था जिसके बाद वह वीडियो कथित यूट्यूबर पत्रकारों के पास पहुंच गया जिसके बाद वीडियो वायरल न करने की खातिर यूट्यूबरों ने कर्मचारी को डिजिटली बंधक बनाकर उसके अंदर भय पैदा कर दिया तब जाकर कर्मचारी को अपना बचाव करने के लिए पत्रकारों को हजारों रुपए देने पड़े

गांधी मेमोरियल अस्पताल के चोर चोरी करते रंगे हाथों पकड़ा

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। रीवा के संजय गांधी अस्पताल में चोरी की घटना अब आम हो चुकी है, बीती रात गांधी मेमोरियल अस्पताल के बच्चा वार्ड में एक चोर चोरी करते हुए रंगे हाथों पकड़ा गया। अटेंडर का पैसा और मोबाइल लेकर भाग रहे चोर को लोगों ने पकड़ लिया और उसकी जमकर धुलाई कर दी। बता दें कि ये घटना बीती रात तकरीबन 2 बजे की है। बताया जा रहा है कि आरोपी बच्चों के गंभीर रोमी वार्ड में घुसा हुआ था, कुछ समय बाद आरोपी, मरीज के अटेंडर का पैसा और मोबाइल लेकर भागने लगा इस दौरान मरीज के ही एक परिजन की नजर आरोपी पर पड़ गई, इसके बाद उसने शोर मचाया तभी मरीज के अन्य परिजन सहित भीड़ ने आरोपी को घेर लिया और चोरी गया मोबाइल व पैसा बरामद होने के बाद उसकी जमकर पिटाई कर दी। इसी दौरान अस्पताल के सुरक्षाकर्मी पहुंच गए और आरोपी को उनसे छुड़ाकर अस्पताल की पुलिस चौकी के सुपुर्द कर दिया।

नवोदय विद्यालय में कक्षा छठवीं की प्रवेश परीक्षा 18 जनवरी को

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। जवाहर नवोदय विद्यालय में कक्षा छठवीं के लिए प्रवेश परीक्षा का आयोजन 18 जनवरी को किया गया है। परीक्षा रीवा और मऊगंज जिलों के ब्लॉक मुख्यालयों में 20 परीक्षा केंद्रों में प्रवेश परीक्षा प्रातः 10 बजे से आरंभ होगी। प्राचार्य मनीष तिवारी ने बताया कि अभ्यर्थी को अपने प्रवेश पत्र के साथ आधार कार्ड, एक नीला या काला बाल व्हाइट पेन तथा रायटिंग पेड साथ में लेकर आना होगा। प्रवेश परीक्षा के लिए प्रवेश पत्र नवोदय विद्यालय की वेबसाइट सीबीएसईआई टीईएमएस डॉट एनआईसी डॉट इन से डाउनलोड किए जा सकते हैं।

स्कूली बच्चों ने खेल-खेल में सीखा भाषा और संख्या ज्ञान

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। राज्य शिक्षा केंद्र के निर्देशानुसार रीवा विकासखंड अंतर्गत समस्त प्राथमिक विद्यालयों में शनिवार को एफएलएन मेले के प्रथम चरण का आयोजन किया गया। इस मेले में कक्षा एक और दो में पढ़ने वाले सभी छात्र-छात्राओं और उनके अभिभावकों को सम्मिलित किया गया। अभिभावक समूह में छात्रों की माताओं को विशेष रूप से आमंत्रित किया गया, इस मेले के माध्यम से कक्षा एक और दो में पढ़ने वाले सभी छात्रों को बुनियादी संख्या और भाषाई दक्षता आकलन हेतु कुल पांच स्तरों पर मूल्यांकन किया गया। जिसमें मुख्य रूप से शारीरिक, बौद्धिक, भाषाई और संख्या ज्ञान का आकलन किया गया। मेले में सभी छात्र-छात्राओं ने पूरे उत्साह और जोश के साथ भाग लिया। इसके पूर्व मेले के सफल आयोजन हेतु शिक्षक-शिक्षिकाओं द्वारा विशेष रूप से तैयारी की। इस मौके पर विद्यालय



को सजाया-संवारा गया। बच्चों को खेल में रुचि में देखते हुए विशेष प्रकार की खेल की विधाएं आयोजित की गईं। संख्या ज्ञान बढ़ाने हेतु विभिन्न प्रकार की घरेलू उपयोग की सामग्री जो आसानी से हमारे घरों



में जिला शिक्षा केंद्र से एकेडमिक प्रभारी केसरी तिवारी, बीआरसी दीपेंद्र सिंह ने सभी शिक्षक-शिक्षिकाओं और जन शिक्षकों को कार्यक्रम की सफलता हेतु शुभकामनाएं प्रदान की।

उप मुख्यमंत्री ने बीहर नदी में निर्मित निषादराज घाट का किया लोकार्पण

विक्रम पुल से निपनिया पुल तक 268.05 लाख रुपये से निर्मित घाट का हुआ लोकार्पण

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)।उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने बीहर नदी में 268.05 लाख रुपये से 970 मीटर लम्बाई के विक्रम पुल से निपनिया पुल तक बनाये गये निषादराज घाट का लोकार्पण किया। उन्होंने पंचमठा सड़क को भी लोकार्पित किया। उप मुख्यमंत्री ने कहा कि रीवा में



अधोसंरचना विकास के साथ ही नदी एवं तालाब सौन्दर्यीकरण के कार्य कराये जा रहे हैं। निषादराज घाट के बन जाने से नदी का सौन्दर्य और भी बढ़ गया है। पंचमठा मार्ग के चौड़े हो जाने से आवागमन में सुगमता हो गयी है। यह सड़क रिवर फ्रंट की एपरोच रोड है इस लिए इसका चौड़ाकरण किया जाना आवश्यक था। उन्होंने कहा कि इस क्षेत्र में ट्रांसपोर्ट्स के लिए पार्किंग की व्यवस्था हेतु ट्रांसपोर्ट नगर में स्थल आवंटित किया जायेगा। कार्यक्रम में अध्यक्ष नगर निगम व्यंकटेश पाण्डेय, विमलेश मिश्रा, मुकेश वास्तव सहित गणमान्य जन व अधिकारी उपस्थित रहे।



आहवान किया कि विद्यार्थियों में मानवीय गुण विकसित करें। क्योंकि बिना संवेदनशीलता व मानवीय गुणों एवं संस्कारों के जीवन अधूरा है। उन्होंने छात्रों से कहा कि अपने संस्कार व संस्कृति को न भूलें तथा नशे की प्रवृत्ति से दूर रहें एवं नशा छोड़ने के लिये लोगों को जागरूक करें। उप मुख्यमंत्री ने आडिटोरियम में साउंड सिस्टम की स्थापना तथा कुर्सी लगाये जाने हेतु इस्टीमेट बनाने के निर्देश दिये। उन्होंने माडल स्कूल

तिवारी के प्रस्तुत करते हुए जानकारी दी कि आडिटोरियम सहित प्राचार्य कक्ष, स्टाफ कक्ष, लायब्ररी, सहित ई एवं एक टाइप कांर्टस, प्रयोगशाला कक्ष का निर्माण कराया गया है। आडिटोरियम की बैठक क्षमता 500 की है। कार्यक्रम में अध्यक्ष नगर निगम व्यंकटेश पाण्डेय, प्राचार्य महेश तिवारी, पूर्व प्राचार्य पंकज शर्मा, डॉ. अनिल वास्तव, प्रदीप गौतम सुमन सहित पार्षदागण, शिक्षक तथा विद्यार्थी उपस्थित रहे।

युवक की कुल्हाड़ी से ली जान, पिता और भाई पर संदेह



मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। शहर के सिटी कोतवाली थाना क्षेत्र के वार्ड क्रमांक एक में युवक की कुल्हाड़ी से मारकर निर्मम हत्या कर दी गई। शव को पिता एवं भाई ठिकाने लगाने की फिराक में थे तभी, स्थानीय लोगों ने घटना की सूचना पुलिस को दे दी। मौके पर पहुंची पुलिस ने पिता और भाग रहे भाई को हिरासत में ले लिया। बताया जा रहा है कि मृतक सनी साकेत निपनिया का निवासी है, जिसका खून से लथ पथ शव कमरे में मिला है। घर की दीवार पर खून के छींटे और पिता

के शरीर में खून के धब्बे देखकर लोगों को शंका हुई। जिसके बाद स्थानीय लोगों ने घटना की सूचना पुलिस को दी। पुलिस ने जब आसपास तलाश शुरू की तो घर के पीछे धारदार कुल्हाड़ी और खून से सने कपड़े मिले। वहीं घटना स्थल से सबूत मिटाने के लिए मिट्टी को खरोच कर दूर फेंकने का प्रयास किया गया। पुलिस ने मृतक के शव को पीएम के लिए अस्पताल भेज दिया है। वहीं संदेह के आधार पर पिता और भाई को हिरासत में लेकर पूछता कर रही है।

नशे में धुत बाइक चोर को नंबर प्लेट बदलते हुए पकड़ा

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। शहर में नशे में चूर बाइक चोर को उस वकत पकड़ा गया जब वो अपने साथी के साथ मिलकर एक घर में बाइक का नंबर प्लेट बदल रहा था। बाइक की तलाश में घूम रहे मोहल्लेवालों ने एक युवक को पकड़ लिया, जबकि दूसरा साथी फरार हो गया। घटना बीती रात शहर के विश्वविद्यालय थाना क्षेत्र स्थित खुटेही मोहल्ले के समीप की है। बताया जा रहा है कि खुटेही मोहल्ले में स्थित एक घर से अज्ञात चोरों ने बाइक पार कर दी थी। घटना की जानकारी होते ही

पुलिस को सूचना दी गई, साथ ही मोहल्ले वासियों ने भी चोरों की तलाश शुरू कर दी। इस दौरान मोहल्ले में ही चोरी की गई बाइक का नंबर प्लेट बदलते हुए दिखे, नशे में धुत एक युवक को लोगों ने पकड़ लिया। जबकि उसका साथी मौके से भाग गया। बताया गया कि जिस युवक को पकड़ा गया है वो नशे में पूरी तरह से चूर था और कुछ भी कहने की स्थिति में नहीं था। युवक ने अपना नाम सत्यम बताया है। पुलिस उसे हिरासत में लेकर बाइक चोरी की घटना के संबंध में जानकारी जुटा रही है।

एथलेटिक्स खिलाड़ियों का ट्रायल 13 को

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। जिले में खेलों इंडिया एथलेटिक्स स्मॉल सेन्टर संचालित किया जा रहा है। जहां खिलाड़ियों के टैलेंट का आईडेंटिफिकेशन किया जाना है। इसके लिए इंडिया स्मॉल सेन्टर का ट्रायल स्पोर्ट्स कॉम्पलेक्स में 13 जनवरी को सुबह 9 बजे से आयोजित

किया जा रहा है। एथलेटिक्स प्रशिक्षक रमेश तिवारी ने बताया कि इच्छुक खिलाड़ी स्पोर्ट्स कॉम्पलेक्स के खेल मैदान में चयन ट्रायल में भाग ले सकते हैं, साथ ही जिन खिलाड़ियों ने पूर्व में खेलों इंडिया स्मॉल सेन्टर का ट्रायल दिया था, वो खिलाड़ी भी ट्रायल में भाग ले सकते हैं।

रतहरा बायपास में दिनदहाड़े एक रिटायर्ड फौजी के साथ लूट

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। रीवा के रतहरा बायपास में दिनदहाड़े एक रिटायर्ड फौजी के साथ लूट का सनसनीखेज मामला प्रकाश में आया है। जहां बदमाशों ने पहले स्क्रॉपियो से बाइक सवार को टक्कर मारकर घायल कर दिया। उसके बाद लाइसेंस पीस्टल सहित पर्स लूटकर फरार हो गए। घायल को अस्पताल में भर्ती कराया गया है। पीड़ित राजवेंद्र तिवारी निवासी महसांव थाना रायपुर करचुलियान में बताया कि वो अपने परिवार से मिलने गांव से रीवा आ रहे थे। तभी शनिवार सुबह करीब 11 बजे स्क्रॉपियो सहित बूलेट सवारों ने पीछा करते हुए गाड़ी से



टक्कर मारकर उन्हें गिरा दिया और फिर लाइसेंस पीस्टल सहित नक़दी रुपए लेकर फरार हो गए। घायल रिटायर्ड फौजी को उपचार के लिए संजय गांधी अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

पूजा बनी लेवल-1 क्रिकेट कोच, पास की बी. सीसी .आई. की परीक्षा

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। रीवा डिवीजन के महिला क्रिकेट टीम की कप्तान पूजा मिश्रा ने बी .सीसी.आई की लेवल 1 क्रिकेट कोच की परीक्षा उत्तीर्ण कर लेवल एक कोच बनने की पात्रता हासिल कर ली है। ये उपलब्धि पाने वाली वो संभाग की पहली व एकमात्र महिला क्रिकेटर हैं। पूजा विगत दस वर्षों से रीवा संभाग की विभिन्न आयु वर्ग की महिला क्रिकेट टीम के लिये खेल चुकी हैं। दायें हाथ की मध्यम तेज गेंदबाज व उपयोगी बल्लेबाजी करने वाली



पूजा मिश्रा मध्यप्रदेश की महिला सीनियर क्रिकेट टीम की सदस्य भी रह चुकी है।

आई .टी .आई में रोज़गार मेला 20 को

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। स्थानीय शासकीय आई टी आई में 20 जनवरी को प्रातः 11 बजे से शाम 4 बजे तक रोजगार मेला आयोजित किया गया है। जिसमें जिले के बेरोजगार युवक.युवतियों

को रोजगार के अवसर उपलब्ध कराए जाएंगे। इस संबंध में उप संचालक रोजगार अनिल दुबे ने बताया कि रोजगार मेले में आठ कंपनियों एवं नियोजकों द्वारा युवाओं का चयन किया जाएगा।

बघेली प्रीमियर लीग में दूसरे दिन हुए दो मैच

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। बघेली कलाकार प्रीमियर लीग के दूसरे दिन मुख्य अतिथि नगर निगम अध्यक्ष वेंकटेश पांडे रहे। दूसरे दिन के आयोजन में दो नॉकआउट मैच हुए। जिसमें पहला

मैच रीवा और सीधी के बीच खेला गया। जिसमें सीधी टीम विजयी रही और दूसरा मैच शहडोल एवं सिंगरौली में खेला गया। जिसमें शहडोल टीम ने जीत हासिल की। रिविहार को सेमी फाइनल मैच होगा।